दैनिक
कारखाने का सफर
मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

वर्ष 6, अंक 232 | भोपाल, सोमवार 2 फरवरी, 2026 | फाल्गुन कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा, 2082 | मूल्य 2 रुपए

युवा शक्ति आधारित बजट 2026-27

समावेशी विकास, तेज आर्थिक वृद्धि और सबका साथ–सबका विकास का संकल्प

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी नई दिल्ली

केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने संसद में केंद्रीय बजट 2026-27 प्रस्तुत किया। माघ पूर्णिमा और गुरु रविदास जयंती के पावन अवसर पर कर्तव्य भवन में तैयार यह पहला बजट युवा शक्ति संचालित है, जो गरीब, शोषित और वंचित समुदायों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। बजट तीन प्रमुख कर्तव्यों से प्रेरित है—आर्थिक वृद्धि को तेज करना और बनाए रखना; लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करते हुए उनकी क्षमता का निर्माण करना; तथा सबका साथ–सबका विकास के विज़न को साकार करना।

पहले कर्तव्य के अंतर्गत सरकार ने छह प्रमुख क्षेत्रों में हस्तक्षेप का प्रस्ताव रखा है, जिनमें विनिर्माण विस्तार, विरासत औद्योगिक क्षेत्रों का पुनर्निर्माण, एमएसएमई को सशक्त बनाना, अवसंरचना पर बल, दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा और शहरी आर्थिक क्षेत्रों का विकास शामिल है। एमएसएमई को भविष्य के चैम्पियन के रूप में विकसित करने के लिए 10,000 करोड़ रुपये के एसएमई विकास निधि का प्रस्ताव किया गया है। सार्वजनिक पूंजीगत व्यय को बीई 2025-26 के 11.2 लाख करोड़ रुपये से बढ़ाकर वित्त वर्ष 2026-27 में 12.2 लाख करोड़ रुपये किया गया है। पर्यावरण की दृष्टि से सतत यात्री परिवहन को बढ़ावा देने के लिए सात उच्च गति रेल गलियारों—मुंबई-पुणे, पुणे-हैदराबाद, हैदराबाद-बेंगलुरु, हैदराबाद-चेन्नई, चेन्नई-बेंगलुरु, दिल्ली-वाराणसी और वाराणसी-सिलीगुड़ी—के विकास का प्रस्ताव है।

स्वास्थ्य एवं फार्मा क्षेत्र में 10,000 करोड़ रुपये की बायोफॉर्मा शक्ति योजना के माध्यम से बायोलॉजिक्स और बायोसिमिलर्स के घरेलू उत्पादन के लिए मजबूत इको-सिस्टम विकसित किया जाएगा। इसके तहत नए एनआईपीईआर संस्थानों की स्थापना, मौजूदा संस्थानों का उन्नयन और सीडीएससीओ को सुदृढ़ किया जाएगा। 17 औषधियों पर मूल सीमा शुल्क से छूट तथा असाधारण रोगों के उपचार में प्रयुक्त दवाओं के निजी आयात पर शुल्क छूट दी जाएगी।

दूसरे कर्तव्य के अंतर्गत शिक्षा, कौशल और मानव पूंजी विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। एवीजीसी क्षेत्र की बढ़ती मांग को देखते हुए भारतीय रचना प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई द्वारा 15,000 उच्च माध्यमिक विद्यालयों और 500 कॉलेजों में कंटेंट निर्माण लैब स्थापित की जाएंगी। उच्च शिक्षा के एसटीईएम संस्थानों में छात्राओं की सुविधा के लिए प्रत्येक जिले में लड़कियों के लिए छात्रावास बनाए जाएंगे। पर्यटन क्षेत्र में 20 स्थलों पर 10,000 गाइडों के कौशल उन्नयन हेतु आईआईएम की साझेदारी में 12-सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रस्तावित है।

खेलो इंडिया मिशन के जरिए अगले दशक में खेल क्षेत्र को परिवर्तित करने का लक्ष्य रखा गया है। तीसरे कर्तव्य के तहत किसानों, दिव्यांगजनों, कमजोर वर्गों, पूर्वोदय राज्यों और पूर्वोत्तर क्षेत्र के सशक्तिकरण पर जोर दिया गया है। बहुभाषीय एआई टूल भारत विस्तार को एग्रीस्टैक और आईसीएआर पैकेज के साथ एकीकृत किया जाएगा, जिससे कृषि उत्पादकता बढ़ेगी और जोखिम घटेगा। लखपति दीदी कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सामुदायिक स्वामित्व वाले शी मार्ट स्थापित किए जाएंगे। मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में निमहांस-2 की स्थापना तथा रांची और तेजपुर में राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थानों के उन्नयन की घोषणा की गई है। प्रत्यक्ष कर सुधारों के तहत नया आयकर अधिनियम, 2025 अप्रैल 2026 से प्रभावी होगा। टीसीएस दरों में कटौती, दंड और अभियोजन को युक्तिसंगत बनाना तथा कर अनुपालन को सरल बनाने के उपाय किए गए हैं। आईटी क्षेत्र के लिए सेफ हार्बर सीमा 300 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 2000 करोड़ रुपये की गई है और विदेशी क्लाउड सेवा प्रदाताओं को 2047 तक कर अवकाश देने का प्रस्ताव है। कुल मिलाकर, केंद्रीय बजट 2026-27 समावेशी विकास, निवेश, रोजगार सृजन और दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता की दिशा में एक दूरदर्शी और संतुलित दस्तावेज़ है।

140 करोड़ देशवासियों की आकांक्षाओं को पूरा करने वाला बजट : आलोक शर्मा

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा संसद में पेश किया गया 2026-27 का केंद्रीय बजट 140 करोड़ देशवासियों की आकांक्षाओं को पूरा करने वाला बजट है। केंद्र सरकार का उद्देश्य आर्थिक विकास को मजबूत करने के साथ साथ समाज के हर वर्ग को विकास में भागीदार बनाना है। 2026-27 का ये बजट 'सबका साथ, सबका विकास' के मंत्र पर आधारित है। इसमें गरीब, युवा, महिला, किसान, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, वरिष्ठ जन, दिव्यांगजन, पिछड़ा वर्ग सभी के आशाओं को पूरा करने का प्रयास किया गया है। खास बात है कि शुगर, कैंसर की जीवन रक्षक दवाओं को शुल्क में छूट दी गई है। बायो फार्मा सेक्टर के लिए 10 हजार करोड़ का प्रावधान, 7 हाई स्पीड रेल कॉरिडोर, कई क्षेत्रो में बड़े टेक्सटाइल पार्क, शहरी आर्थिक क्षेत्र पर प्रतिवर्ष 5 हजार करोड खर्च का प्रावधान, 20 नए जलमार्गों का विकास, चार राज्यों में खनिज कॉरिडोर, तीन केमिकल पार्क, तीन नए आयुर्वैदिक एम्स बनाए जाने का प्रावधान इस बजट में किया गया है। आर्थिक विकास के ग्रोथ इंजिन में टेक्नोलॉजी का विस्तार कर हर वर्ग को विकास में भागीदार बनाने का इस बजट में प्रावधान किया गया है। ये बजट विकसित भारत 2047 के अटल संकल्प को पूरा करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

बजट 2026-27 सहकारी क्षेत्र के लिए एक मील का पत्थर है जिसके तहत, सरकार का मुख्य फोकस सहकारी क्षेत्र को सशक्त बनाना है। सहकार से समृद्धि का उद्देश्य पूरा करना है।इसमें राष्ट्रीय सहकारी संघों के डिविडेंड पर 3 साल की कर-छूट, नई सहकारी विनिर्माण इकाइयों के लिए 15% की रियायती कर दर, और कृषि-सहकारी ढाँचे के डिजिटलीकरण के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने पर जोर दिया गया । इस बजट से देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी ।

-बसंत कुमार, अध्यक्ष, थ्रिफ्ट सोसाइटी

आज पेश हुए बजट में इनकम टैक्स में छूट की सीमा नहीं बढ़ाई गई जिससे देश के करोड़ों नौकरीपेशा लोगों को नुकसान हुआ देश के कारखानों में कार्य करने वाले करोड़ों श्रमिकों, मजदूरों एवं आउटसोर्स कर्मचारियों को ठेका प्रथा समाप्त कर उनका वेतन भी 30,000 रुपये प्रतिमाह किया जाना चाहिए था। जो की नहीं किया गया। यह बजट श्रमिक, मजदूर एवं कर्मचारी विरोधी बजट रहा।

-दीपक गुप्ता, श्रमिक कांग्रेस नेता

नया बजट मेरी दृष्टि में...

सामान्य तौर पर देखा जाए तो बजट अच्छा है क्योंकि इसमें कोई नया टैक्स नहीं लगाया गया है। सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो बजट के केंद्र में वे प्राथमिकताएं हैं जिनके निर्यात के समझौते यूरोपीय देशों से किए गए हैं जैसे शराब ड्राई फ्रूट्स, औद्योगिक मशीनें आदि निर्यात के समझौते हुए हैं तो शराब, ड्राई फ्रूट्स आदि को सस्ता किया गया है। पूरा जोर उत्पादन बढ़ाने और इसकी गुणवत्ता बढ़ाने पर है ताकि अधिकतम निर्यात से अर्थव्यवस्था मजबूत हो और रोजगार मिले, मजबूत फाइनेंस सिस्टम, कृषि में अधिक उत्पादकता पर जोर, एक हजार क्लीनिकल ट्रायल सेंटर,रिसर्च एंड डेवलपमेंट को बढ़ावा, दुर्लभ खनिज उत्पादन हेतु राज्यों के सहयोग से चार राज्यों में कारीडोर का निर्माण, छोटे और मध्यम उद्यमों के विकास हेतु क्रमश दो हजार और दस हजार करोड़ के प्रावधान हाई स्पीड रेल कारीडोर, कृत्रिम बुद्धिमता विकास हेतु जलमार्गों के विकास देश को मेडिकल टूरिज्म के लिए तैयार करने हेतु योजनाएं, नए विकसित भारत की तस्वीर गढ़ेंगी, परंतु मध्यम वर्ग को अपेक्षा थी कि आयकर की स्लेव में बदलाव होगा वह नहीं हुआ, बड़े शहरों के मार्गों को विकसित करने की बात है, किंतु छोटे शहरों और ग्रामीण विकास का रोड़मेप गायब है। कृषि उत्पादन पर जोर है परंतु भंडारण हेतु वेयर हाउस एवं कोल्ड स्टोरेज चैन हेतु कुछ नहीं है। यू पी, बिहार, पूर्वोत्तर राज्यों, आदि के विकास की बात है, परंतु मध्य भारत के लिए अलग से बजट में कोई प्रावधान नहीं है।

-गोकुल सोनी, सेवा निवृत्त बैंक अधिकारी एवं साहित्यकार

इंसेंटिव स्कीम–2024 कर्मचारियों के हितों का नकारा गया था; ऐबू ने रखा स्पष्ट रुख और मांग पत्र

• बीएचईएल भोपाल में लागू की गई इंसेंटिव (रिवॉर्ड) स्कीम–2024 को लेकर कर्मचारियों में व्यापक असंतोष बना हुआ है • बीएचईएल की प्रतिनिधि यूनियन ऑल इंडिया बीएचईएल एम्पलाइज यूनियन (ऐबू) संबद्ध एनएफआईटीयू ने इस स्कीम को कर्मचारियों के हितों के विपरीत बताया था • ऐबू ने पहले दिन से ही विरोध दर्ज कराते हुए स्पष्ट मांग पत्र प्रस्तुत किया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

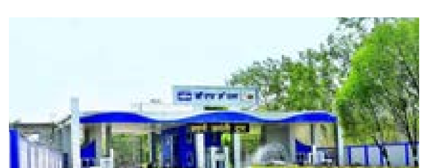

बीएचईएल भोपाल में लागू की गई इंसेंटिव (रिवॉर्ड) स्कीम–2024 को लेकर कर्मचारियों में व्यापक असंतोष बना हुआ है। बीएचईएल की प्रतिनिधि यूनियन ऑल इंडिया बीएचईएल एम्पलाइज यूनियन (ऐबू) संबद्ध एनएफआईटीयू ने इस स्कीम को कर्मचारियों के हितों के विपरीत बताते हुए पहले दिन से ही विरोध दर्ज कराया है और स्पष्ट मांग पत्र प्रस्तुत किया। यूनियन का कहना है कि ऐबू को छोड़कर सभी यूनियन ने जल्दबाजी में इस स्कीम पर हस्ताक्षर कर कर्मचारियों के साथ कुठाराघात किया। जबकि ऐबू यूनियन ने इसे अस्वीकार्य बताते हुए हस्ताक्षर करने से साफ इनकार कर दिया था। क्योंकि यह स्कीम बीएचईएल भोपाल के कर्मचारियों के लिए नुकसानदेह थी।

ऐबू ने याद दिलाया कि 1989 की इंसेंटिव स्कीम भी बीएचईएल भोपाल के कर्मचारियों के लिए नकारात्मक साबित हुई थी, जबकि अन्य बीएचईएल इकाइयों में उसी समयावधि में कर्मचारियों को ओवरटाइम का नगद भुगतान मिलता रहा, जो उनके लिए लाभकारी सिद्ध हुआ। इसी इतिहास को देखते हुए ऐबू ने 2024 की स्कीम पर भी कड़ा रुख अपनाया।

कोविड काल के बाद जब यह स्कीम पुनः लागू की गई, तब भी इसे बिना पर्याप्त विचार-विमर्श के जल्दबाजी में लागू किया गया। हाल ही में 30 जनवरी को हैदराबाद में हुई सब-कमेटी की बैठक में मात्र 20 प्रतिशत वृद्धि की बात कही गई, जिसे कर्मचारियों ने "ऊँट के मुँह में जीरा" बताया।

ऐबू का मांग पत्र (बुलेटिन) दो दिल पहले हैदराबाद की सब कमेटी की बैठक से पहले लारी किया गया। इसमें ऐबू ने रिवॉर्ड स्कीम–2024 में सुधार हेतु निम्नलिखित मांगें रखी हैं ---

• रिवॉर्ड भुगतान का आधार 200 घंटे के स्थान पर पूर्ववत 208 घंटे किया जाए।
• D/R (Direct Recruits) और Tenure Based कर्मचारी भी रिवॉर्ड स्कीम में शामिल किए जाएँ।
• केंद्रीय रखरखाव एवं सेवाएँ, केंद्रीय भंडार, केंद्रीय प्रेषण तथा अन्य सहायक विभागों को Ancillary श्रेणी में रखकर उचित रिवॉर्ड दिया जाए।
• विशेष स्किल (फोर्कलिफ्ट, क्रेन आदि) वाले कर्मचारियों को भी योजना के तहत पात्र माना जाए।
• रिवॉर्ड गणना का फार्मूला न्यायसंगत बनाया जाए, जिसमें सहायक कर्मचारियों के लिए 0.6 के स्थान पर उच्च फैक्टर लागू हो।
• परफॉर्मेंस इंडेक्स के स्लैब में सुधार कर निम्न और मध्यम श्रेणी के कर्मचारियों को अधिक लाभ दिया जाए।
• विभागवार रिवॉर्ड वितरण में पारदर्शिता लाई जाए।
• उपस्थिति आधारित कटौती के नियमों में नरमी बरती जाए ताकि वास्तविक अवकाश लेने वाले कर्मचारियों को अनुचित नुकसान न हो।
• ऐबू ने स्पष्ट किया कि यदि यह मांगें स्वीकार नहीं की गईं, तो यूनियन कर्मचारियों के साथ मिलकर आगे की रणनीति तय करेगी।

यूनियन का रुख-

ऐबू ने कहा कि अन्य यूनियनों के स्वार्थ और गलत निर्णयों के कारण आज कर्मचारियों को लाखों रुपये का नुकसान हो रहा है। यूनियन ने भरोसा दिलाया कि वह हमेशा जमीनी स्तर पर काम करती रही है और करती रहेगी।

विशाल वाणी
कोषाध्यक्ष ऐबू संबद्ध निफ्टू
राष्ट्रीय सचिव निफ्टू

आशीष सोनी
कार्यवाहक अध्यक्ष ऐबू
प्रदेश उपाध्यक्ष निफ्टू

यूनियन ने यह भी कहा कि आने वाले चुनाव में कर्मचारी भली-भाँति समझदारी से निर्णय लेंगे, क्योंकि ऐबू ही वह यूनियन है जो कर्मचारियों की वास्तविक आवाज़ बनी हुई है और आगे भी पूरी ईमानदारी एवं मजबूती से उनके हितों की रक्षा करेगी।

ऐबू यूनियन के अनुसार 20% वृद्धि के हिसाब से तो भोपाल में लागू पुरानी इंसेंटिव स्कीम को पाने में ही पांच साल लग जाएगे जबकि अन्य पीएसयू एवं प्राइवेट सेक्टर में कही ज्यादा पैसा मिल रहा है। लगभग ढाई लाख करोड़ के ऑर्डर बीएचईएल के पास है प्रॉफिट लगातार हो रहा है लेकिन इंसेंटिव बढ़ने के जगह कम हुआ है जो न्याय संगत नहीं है। प्रबंधन के 30 जनवरी के सुझाव पर ऐबू को छोड़कर अन्य यूनियन हामी भर चुकी थी, लेकिन निफ्टू के लीडर के द्वारा घोर आपत्ति लेने पर मामला इस फाइनेंशियल ईयर के लिए टाल दिया गया क्योंकि प्रोडेक्शन में नुकसान की संभावना थी। जबकि इस समय प्रॉफिट लगातार बढ़ता जा रहा है।

समाचार संपादक की कलम से
–राहुल कौशिक

वैश्विक बिजली उत्पादन में बदलता संतुलनः 2025 की तस्वीर

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

दुनिया की आर्थिक, औद्योगिक और तकनीकी प्रगति का सबसे बड़ा आधार ऊर्जा है, और ऊर्जा में भी बिजली सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्ष 2025 के वैश्विक बिजली उत्पादन के आंकड़े यह साफ संकेत देते हैं कि आने वाले समय में वैश्विक शक्ति संतुलन किस दिशा में बढ़ रहा है। हाल ही में सामने आए आंकड़ों के अनुसार, दुनिया के कुल बिजली उत्पादन में चीन की हिस्सेदारी 33.2%, अमेरिका की 14.2%, जबकि शेष विश्व की संयुक्त हिस्सेदारी 52.6% है। यह आंकड़ा केवल ऊर्जा का नहीं, बल्कि आर्थिक और रणनीतिक शक्ति का भी संकेतक है।

चीनः बिजली उत्पादन का वैश्विक नेता - चीन आज दुनिया का सबसे बड़ा बिजली उत्पादक देश बन चुका है। 33.2% की हिस्सेदारी यह दर्शाती है कि चीन ने पिछले दो दशकों में अपने औद्योगिक ढांचे, कोयला आधारित संयंत्रों, जलविद्युत, सौर और पवन ऊर्जा में जबरदस्त निवेश किया है। विशाल जनसंख्या, तेजी से बढ़ता शहरीकरण और निर्यात-आधारित उद्योगों ने चीन को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर ही नहीं, बल्कि अग्रणी बना दिया है। चीन की यह स्थिति केवल वर्तमान जरूरतों तक सीमित नहीं है, बल्कि भविष्य की तैयारी भी दिखाती है। इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी निर्माण, ग्रीन हाइड्रोजन और स्मार्ट ग्रिड जैसे क्षेत्रों में चीन की बढ़त आने वाले वर्षों में उसकी पकड़ और मजबूत कर सकती है।

अमेरिकाः तकनीक के बावजूद सीमित हिस्सेदारी- दूसरी ओर, अमेरिका जैसी विकसित अर्थव्यवस्था की हिस्सेदारी 14.2% रहना कई सवाल खड़े करता है। अमेरिका तकनीक, नवाचार और उच्च ऊर्जा दक्षता में भले ही अग्रणी हो, लेकिन उत्पादन के मामले में वह चीन से काफी पीछे है। इसका एक कारण यह भी है कि अमेरिका की ऊर्जा नीति अब बड़े पैमाने पर ऊर्जा दक्षता, नवीकरणीय स्त्रोतों और कार्बन उत्सर्जन में कटौती पर केंद्रित है। अमेरिका का फोकस अब "ज्यादा उत्पादन" से ज्यादा "स्मार्ट और साफ उत्पादन" पर है। हालांकि, यह रणनीति पर्यावरण के लिहाज से सही है, लेकिन वैश्विक बिजली हिस्सेदारी में उसकी स्थिति सीमित हो गई है।

बाकी दुनियाः सामूहिक ताकत, बिखरी दिशा- बाकी दुनिया की संयुक्त हिस्सेदारी 52.6% है, जिसमें भारत, यूरोप, अफ्रीका, मध्य-पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया शामिल हैं। यह आंकड़ा बताता है कि दुनिया का बड़ा हिस्सा अभी भी ऊर्जा के लिए संघर्ष कर रहा है। कहीं मांग तेजी से बढ़ रही है, तो कहीं संसाधनों की कमी है। भारत जैसे विकासशील देश तेजी से अपनी बिजली उत्पादन क्षमता बढ़ा रहे हैं, खासकर सौर और पवन ऊर्जा में। अफ्रीका और कुछ एशियाई देशों के लिए बिजली अब भी बुनियादी जरूरत बनी हुई है, जहां उत्पादन से ज्यादा वितरण और पहुंच बड़ी चुनौती है।

भविष्य का संकेत- 2025 के ये आंकड़े यह साफ कर देते हैं कि आने वाला समय ऊर्जा-आधारित भू-राजनीति का होगा। जिस देश के पास सस्ती, स्थिर और पर्याप्त बिजली होगी, वही उद्योग, तकनीक और रोजगार में आगे रहेगा। साथ ही, नवीकरणीय ऊर्जा और पर्यावरण संतुलन अब अनदेखा नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष - वैश्विक बिजली उत्पादन की यह तस्वीर सिर्फ आंकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि यह दुनिया की आर्थिक दिशा, औद्योगिक ताकत और राजनीतिक प्रभाव को भी दर्शाती है। चीन का दबदबा, अमेरिका की रणनीतिक संतुलन नीति और बाकी दुनिया की साझा चुनौतियाँ यह संकेत देती हैं कि ऊर्जा आने वाले दशकों में सबसे बड़ा निर्णायक कारक बनने वाली है।

सभ्य समाज और असभ्य आचरण : भोपाल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स चुनाव के बाद का दृश्य एक गंभीर प्रश्न छोड़ गया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

आज भोपाल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स के चुनाव संपन्न हुए। यह आयोजन केवल एक संस्था का चुनाव नहीं था, बल्कि भोपाल शहर के सामाजिक, व्यापारिक और बौद्धिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता था। अनुमानतः लगभग 5000 से अधिक प्रतिष्ठित, प्रबुद्ध नागरिक, व्यापारी एवं विभिन्न संस्थाओं से जुड़े पदाधिकारी इस चुनाव प्रक्रिया में सहभागी बने।

लेकिन चुनाव समाप्त होने के बाद जो दृश्य सामने आया, वह अत्यंत दुखद और चिंताजनक था।

चुनाव प्रचार के लिए वितरित की गई सामग्री—पर्चे, पोस्टर, बैनर—जगह-जगह फेंकी हुई मिली। इतना ही नहीं, पानी की बोतलें, खाने के पैकेट और अन्य उपयोग की वस्तुएँ भी चारों ओर बिखरी हुई थीं। यह स्थिति तब की है, जब वहाँ सफ़ाई के लिए झाड़ू लग चुकी थी। झाड़ू लगने से पहले वहाँ का दृश्य कैसा रहा होगा, इसकी कल्पना मात्र से ही स्थिति की गंभीरता समझी जा सकती है। यह घटना कई सवाल खड़े करती है—

क्या हम केवल मंचों से स्वच्छता और सामाजिक जिम्मेदारी की बात करना जानते हैं?

क्या "स्वच्छ भारत" का विचार केवल नारों तक सीमित रह गया है?

क्या शहर के सबसे जागरूक माने जाने वाले वर्ग से भी हम सार्वजनिक स्थानों के प्रति संवेदनशील व्यवहार की अपेक्षा नहीं कर सकते?

यह किसी एक व्यक्ति या समूह पर उंगली उठाने का विषय नहीं है, बल्कि सामूहिक आत्ममंथन का अवसर है। जिस शहर को हम स्मार्ट सिटी, संस्कारी शहर और सभ्य समाज का प्रतीक बताते हैं, वहाँ इस तरह का आचरण हमारे दावों को कमजोर करता है

चुनाव, सम्मेलन या कोई भी सार्वजनिक कार्यक्रम—इन सबकी सफलता केवल भीड़ या आयोजन से नहीं, बल्कि आयोजन के बाद छोड़े गए प्रभाव से मापी जाती है,यदि आयोजन के बाद गंदगी, अव्यवस्था और लापरवाही का दृश्य रह जाए, तो यह हम सभी के लिए आत्मचिंतन का विषय होना चाहिए

आवश्यक है कि भविष्य में ऐसे आयोजनों में—

कचरा प्रबंधन की स्पष्ट व्यवस्था हो,प्रचार सामग्री सीमित और जिम्मेदारी के साथ वितरित की जाए और सबसे महत्वपूर्ण, हर सहभागी अपनी नागरिक जिम्मेदारी समझे, शहर की छवि किसी एक संस्था या प्रशासन से नहीं, बल्कि हम सभी के व्यवहार से बनती है आज जो तस्वीरें सामने आई हैं, वे केवल ज़मीन पर फैले कचरे की नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक चेतना की परीक्षा भी हैं,आशा है कि यह घटना हम सबको सोचने, सीखने और आगे बेहतर करने की प्रेरणा देगी।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय
गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

सीए फ्रेंड्स क्लब भोपाल द्वारा टर्फ क्रिकेट टूर्नामेंट सीज़न–3 का भव्य आयोजन, टीम हसलर्स बनी चैंपियन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सीए फ्रेंड्स क्लब भोपाल द्वारा आयोजित टर्फ क्रिकेट टूर्नामेंट सीज़न–3 का भव्य एवं सफल आयोजन किया गया, जिसमें भोपाल के 100 से अधिक चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में कुल 8 टीमों ने हिस्सा लिया और सभी टीमों ने खेल भावना के साथ शानदार प्रदर्शन किया। टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला टीम हसलर्स (कप्तानः अनुग्रह) और टीम लीजेंड्स (कप्तानः ऋषभ) के बीच खेला गया। टॉस जीतकर टीम हसलर्स ने पहले बल्लेबाज़ी करने का निर्णय लिया। पहले बल्लेबाज़ी करते हुए टीम हसलर्स ने आक्रामक खेल का प्रदर्शन करते हुए 8 ओवर में 112 रन का मजबूत स्कोर खड़ा किया।

टीम हसलर्स की ओर से गोविंद रिनवा ने शानदार बल्लेबाज़ी करते हुए मात्र 26 गेंदों में 62 रन बनाए, जो फाइनल का सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर रहा। वहीं गेंदबाज़ी में कप्तान अनुग्रह ने बेहतरीन नियंत्रण दिखाते हुए 2 ओवर में 2 विकेट झटके और विपक्षी टीम पर दबाव बनाया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी टीम लीजेंड्स (कप्तानः ऋषभ) की टीम 8 ओवर में 5 विकेट के नुकसान पर 82 रन ही बना सकी। टीम लीजेंड्स की ओर से दिव्यांशु ने 14 गेंदों में 34 रन की तेज़तर्रार पारी खेली, लेकिन टीम जीत से 30 रन पीछे रह गई। इस प्रकार टीम हसलर्स ने यह फाइनल मुकाबला 30 रन से जीतकर टूर्नामेंट सीज़न–3 की ट्रॉफी अपने नाम की।

फाइनल मैच में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए गोविंद रिनवा को मैन ऑफ द मैच चुना गया। वहीं पूरे टूर्नामेंट में शानदार ऑल-राउंड प्रदर्शन के लिए राहुल गुर्मलानी को मैन ऑफ द टूर्नामेंट के साथ-साथ बेस्ट बैट्समैन और बेस्ट बॉलर के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बेहतरीन फील्डिंग के लिए मोहित को बेस्ट फील्डर का पुरस्कार प्रदान किया गया।

इस सफल आयोजन को AU बैंक, PNB बैंक, जस्टिफाई तथा बजाज जनरल इंश्योरेंस और बजाज जनरल इंश्योरेंस का सहयोग प्राप्त हुआ। टूर्नामेंट के आयोजन में आयोजन समिति के सदस्य सचिन राय, राहुल, अनुनय, अनुग्रह, निर्भय, हिमांशु, चेतन, यद्वेंद्र, सक्षम, दिव्यांशु, प्रफुल्ल एवं करण का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सीए फ्रेंड्स क्लब भोपाल का यह आयोजन न केवल रोमांचक क्रिकेट का साक्षी बना, बल्कि चार्टर्ड अकाउंटेंट समुदाय के बीच आपसी सौहार्द, एकता और खेल भावना को भी सुदृढ़ करने में सफल रहा।

ग्राम इकलेरा में सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का भव्य समापन

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

ग्राम इकलेरा में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञानयज्ञ का भक्तिमय वातावरण में भव्य समापन हुआ। कथा के साथ-साथ देवनारायण भगवान कथा एवं श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का आयोजन भी अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ संपन्न हुआ, जिससे पूरे ग्राम में धार्मिक उल्लास का वातावरण बना रहा।कथा वाचन का पुण्य लाभ श्रीमद् भागवत कथा वाचक श्री जितेंद्र जी शास्त्री एवं देवनारायण भगवान कथा वाचक श्री रमेश जी शर्मा व वैदिक मंत्रोच्चार प रोहित जी शर्मा व प गोपाल बैरागी द्वारा प्रदान किया गया। कथा वाचकों ने भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं, जन्मोत्सव प्रसंग, देवनारायण भगवान की महिमा, भक्ति, धर्म और मानव जीवन में सदाचार के महत्व पर भावपूर्ण प्रकाश डाला।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के अवसर पर विशेष झांकी, भजन-कीर्तन एवं महाआरती का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने नंद के आनंद में भाग लेकर भक्ति भाव से उत्सव मनाया।समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विधायक प्रतिनिधि श्री पृथ्वीराज टेटवाल, जिला मंत्री मंडल प्रभारी श्री मनोहर सिंह जी परमार, मंडल अध्यक्ष श्री शेखर शर्मा जी, मंडल महामंत्री श्री जगदीश जी राजपूत, सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।आयोजन का दायित्व समस्त ग्रामवासी ग्राम इकलेरा द्वारा निभाया गया। समापन अवसर पर आभार श्री समिति के अध्यक्ष एवं समस्त ग्रामवासियों द्वारा व्यक्त किया गया। आयोजन को सफल बनाने में ग्राम के सेवाभावी युवाओं एवं कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा।

जिसमें आसपास के गांव तारागंज बाबडलिया गुलावता भूराखेड़ी नीटलडी सारंगपुर नगर के भक्त गण उपस्थित हुए।अंत में प्रसाद वितरण के साथ सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा, देवनारायण भगवान कथा का समापन हुआ।

स्वामी रामचरण जी महाराज की जयंती पर महा आरती का आयोजन

मंदिर के सौंदर्य करण एवं निर्माण का लिया निर्णय

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

सारंगपुर समाज के विकास के लिए सभी को संगठित और अनुशासित रहने की आवश्यकता है यह बात अंतर्राष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय के प्रवर्तक संत शिरोमणि विजयवर्गीय समाज के आराध्य स्वामी श्री राम चरण जी महाराज की जयंती अवसर पर भगवान चतुर्भुज नारायण मंदिर पर आयोजित स्वामी जी की पूजन महाआरती अवसर पर एडवोकेट श्री ओ.पी. विजयवर्गीय ने अतिथि के रूप में व्यक्त किए।महाआरती में नगर के समस्त विजयवर्गीय परिवार उपस्थित थे जहां पर आयोजित बैठक के अवसर पर जनहित में मंदिर के सौंदरीकरण एवं आवश्यक निर्माण किए जाने हेतु समिति गठन का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर शाजापुर से पधारे समाजसेवी श्री ओम विजयवर्गीय द्वारा स्वामी जी द्वारा दिए गए मानवता एवं परोपकार के संदेश को उल्लेखित करते हुए मानवता के लिए मृत्यु उपरांत अंगदान एवं नेत्रदान हेतु समाजजनों को प्रोत्साहित करने पर बल दिया। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर उपस्थित सभी समाज बंधुओ का स्वागत एव वर्ष भर के कार्यों का प्रतिवेदन सारंगपुर समाज अध्यक्ष श्री संजय विजयवर्गीय द्वारा प्रस्तुत किया गया इसके उपरांत स्वामी जी की पूजा अर्चना एवं सामूहिक महाआरती का आयोजन हुआ उसके बाद समूह भोज का आयोजन हुआ । महा आरती मे प्रमुख रूप से भारतीय स्टेट बैंक के शाखा प्रबंधक संजय विजयवर्गीय श्री गोकुल प्रसाद , विजयवर्गीय श्री बाबूलाल , विजयवर्गीय, श्री योगेश विजयवर्गी, श्री विकास विजयवर्गीय, श्री सुनील विजयवर्गीय , श्री सतीश विजयवर्गी श्री प्रदीप विजयवर्गीय श्री राधे श्याम विजयवर्गीय, चेतन, प्रवीण, मुकेश प्रकाश बृजेश राजेंद्र मनीष सुमित अथर्व सत्यनारायण विजयवर्गीय एवं मातृशक्तियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

भेल ऑफिसर्स क्लब, भोपाल में "ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट – 2026" का भव्य शुभारंभ, रिकॉर्ड सहभागिता के साथ

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भेल ऑफिसर्स क्लब, भोपाल में बहुप्रतीक्षित "ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट 2026" का शुभारंभ 1 फरवरी 2026 शाम 5 बजे हुआ, यह प्रतियोगिता 1 से 5 फरवरी तक चलेगी, जिसमें पाँच दिनों तक रोमांचक और प्रतिस्पर्धात्मक बैडमिंटन मुकाबले देखे जाएंगे। इस टूर्नामेंट में विभिन्न श्रेणियाँ शामिल हैं - सब जूनियर, जूनियर, मेन्स एवं वुमेन्स और मास्टर्स जिसमे भोपाल और आसपास के क्षेत्रों से 180 से अधिक खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर इस आयोजन को अभूतपूर्व प्रतिसाद दिया है।

उद्घाटन समारोह 1 फरवरी को शाम 5:00 बजे आयोजित किया गया, मुख्य अतिथि रूपेश तैलंग , (महाप्रबंधक ट्रांसफॉर्मर्स एवं फीडर्स, भेल भोपाल एवं अध्यक्ष, भेल ऑफिसर्स क्लब), अनुराधा तैलंग तथा ऑफ़िसर्स क्लब के सभी सदस्य उपस्थित रहे। श्री तैलंग ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया और प्रतिभागियों को खेल भावना के साथ खेल में भाग लेने का आह्वान किया उन्होंने अपेक्षा की कि इस बैडमिंटन टूर्नामेंट में भाग ले रहे खिलाड़ी इतने बड़े खिलाड़ी बने कि उनकी फोटो साइना नेहवाल और सिंधु जैसे दिग्गज खिलाड़ियों के साथ इस कोर्ट की दीवारों पर लगे । क्लब कमेटी के सदस्य, विशेषरूप से आशीष गुप्ता, बैडमिंटन सचिव के प्रयासों को सराहा।

गायत्री प्रज्ञा पीठ बरखेड़ा में बाल संस्कार शालाओं का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

गायत्री प्रज्ञापीठ बरखेड़ा के तत्वावधान में बाल संस्कार शाला प्रकोष्ठ द्वारा संचालित बाल संस्कार शालाओं का वार्षिकोत्सव भव्य रूप से आयोजित किया गया। कार्यक्रम श्री राजेश पटेल, जोन समन्वयक, गायत्री परिवार के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ, जबकि नगर की प्रथम नागरिक महापौर श्रीमती मालती राय विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। वार्ड-56 के पार्षद श्री नीरज सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही।

बाल संस्कार शाला प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री अनिल कछावा ने जानकारी देते हुए बताया कि गायत्री परिवार भोपाल शहर के 105 केन्द्रों पर बाल संस्कार शालाओं का संचालन कर नौनिहालों के सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण की दिशा में निरंतर प्रयासरत है। कार्यक्रम में बाल संस्कार शाला के बच्चों ने नृत्य, नाटक तथा राष्ट्र के सैन्य शौर्य को दर्शाने वाली कुल 27 मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं, जिन्हें दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सराहा।

अपने उद्बोधन में महापौर श्रीमती मालती राय ने कहा कि गायत्री परिवार द्वारा निःशुल्क संचालित बाल संस्कार शालाएँ भारत के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव तैयार कर रही हैं। वहीं, श्री राजेश पटेल ने इसे गायत्री परिवार के शिक्षा आंदोलन की सफलता का प्रतीक बताते हुए संचालन टीम की सराहना की।

प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रस्तुतियों के लिए प्रथम पुरस्कार महर्षि बाल्मीकि, द्वितीय पुरस्कार स्वास्तिक तथा तृतीय पुरस्कार आनंदम बाल संस्कार शाला को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त सांत्वना पुरस्कार ऋषि अत्रि एवं बालिका छात्रावास को मिला।

वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री सी.एल. चौरासे ने बाल संस्कार शाला संचालन टीम के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह कार्य युग निर्माण के लिए नई पीढ़ी को संस्कारित करने का महत्वपूर्ण प्रयास है।

कार्यक्रम का कुशल संचालन श्रीमती रुचि श्रीवास्तव एवं दीपमाला संकड़िया ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन गायत्री परिवार ट्रस्ट बरखेड़ा के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री शिवनारायण राजपूत द्वारा किया गया।

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

श्री दादाजी वचनामृत... ज्ञान और अज्ञान

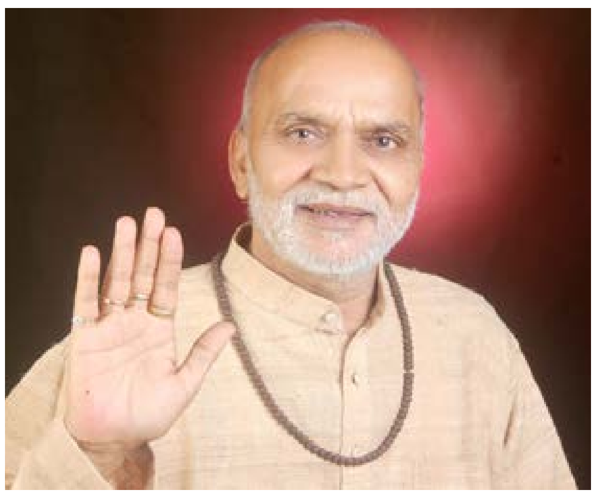

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

अस्थायी संसार को स्थायी मानकर जो अज्ञानी जीव इस मोह में फँसा हुआ है, उसकी अज्ञानता का वर्णन किया जाना कठिन है। इस भ्रांति में पड़कर वह प्राणी कितना व्याकुल और दुःखी हो जाता है इसका सजीव चित्रण करते हुए दादाजी कहते हैं हे दीनबंधु! मैंने अपने जीवन में अपने सभी रिश्तेदारों और प्रिय समझे जाने वाले मित्रों से बहुत आशाएँ रखीं कि वे मेरे काम आएँगे, पर अंततः उनसे केवल धोखा ही मिला। हे प्रभु! अब आपकी बारी है। आपका नाम ही पतित-पावन है, इसलिए अपने नाम की लाज रखते हुए मुझे अपना अज्ञानी समझकर मेरी बिगड़ी हुई दशा को अपनी कृपा-हस्त से सँभालिए।

मैं जैसे मूर्ख ने बचपन खेलकूद में गँवा दिया और यौवनावस्था विषय भोग में समाप्त कर दी। अब वृद्धावस्था में पहुँचकर जब आत्मा की आँखें खुलीं तब ज्ञात हुआ कि हाय! इस संसार में मुझे क्या करना था और मैं क्या कर बैठा। अपने पूर्व कर्मों के परिणामस्वरूप भविष्य में मिलने वाले कष्टों का स्मरण कर मन काँप उठता है। हे गरीबों की दुःखभरी पुकार सुनने वाले प्रभु! इस समय आपके सिवाय मुझे कोई सहारा दिखाई नहीं देता। अब तो सब आशाएँ त्यागकर आपके द्वार पर आ बैठा हूँ। आप ही मेरी रक्षा कीजिए। हे मेरे परमपिता जिस संतान के लिए मैंने कितने ही व्रत-उपवास किए, जिसके जन्म पर मैंने हर्ष मनाया, जिसकी शिक्षा और पालन-पोषण के लिए सत्य-असत्य किसी भी प्रकार से धन अर्जित कर खर्च किया, जिसकी विवाह में हृदय खोलकर संपत्ति लुटाई उसी संतान के लिए मैंने खून पसीना एक किया इस आशा में कि वृद्धावस्था में वह मेरा सहारा बनेगी। पर आज वही संतान मुझे नाकारा, पुराने टूटे-फूटे बर्तन की

भाँति अलग कर देना चाहती है। अब उन्हें मेरी कोई बात पसंद नहीं आती; यहाँ तक कि मेरा शरीर भी उनके लिए भार बन गया है। हे प्रभु! जिसे मैं अपनीअर्धांगिनी समझता था, उसकी प्रत्येक इच्छा पूर्ण करने के लिए मैं पाप कर्मों से भी नहीं हिचका। वही स्त्री, जो यौवनावस्था में मुझे "नाथ" और "स्वामीजी" कहकर पुकारती थी, आज मेरी सेवा से भी इंकार कर चुकी है। हे प्रभु! सगे भाई, जिन्हें मैं अपनी भुजाओं के समान मानता था, जिनका प्रेम कभी अपार था न जाने वह प्रेम कहाँ लुप्त हो गया। जो मुझे "भ्राताजी" कहकर हर बात पूछते थे, आज दूर से ही मुँह फेर लेते हैं, मेरा मुख तक देखना नहीं चाहते। हे प्रभु! और अधिक क्या कहूँ रिश्तेदारों ने तो पीठ दिखाई ही, पर आश्चर्य तो अपने ही शरीर को देखकर होता है। जिस देह को मैं साबुन से मल-मलकर साफ करता था, तेल लगाकर कोमल बनाता था, महँगे वस्त्र सिलवाकर पहनाता था, इत्र लगाकर सुगंधित करता था वही शरीर अब शिथिल होकर प्राणों से अलग होना चाहता है। पाँव चलने से और कान सुनने से जवाब दे चुके हैं। आँखों से निरंतर जल बहता रहता है, जिससे ठीक से दिखाई भी नहीं देता। जो बाल कभी काली स्याही की तरह चमकते थे, वे अब बर्फ की तरह श्वेत हो गए हैं। जो कंठ कभी मधुर था, वह अब कफ से भरा रहता है। दिन-रात चिंताएँ घेरे रहती हैं किसी क्षण भी सुख का अनुभव नहीं होता। पर हे प्रभु! एक बात और भी आश्चर्य में डालने वाली है इतने कष्ट भोगने के बाद भी हृदय से मोह निकलने का नाम नहीं लेता। संसार की नश्वरता प्रत्यक्ष देखकर भी लोभ और लालच दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं; तृष्णा शांत नहीं होती। रिश्तेदार और घरवाले मुझे दूर करना चाहते हैं, पर मेरा मोह उन्हीं की ओर और अधिक बढ़ता जा रहा है। हे प्रभु अब आपके सिवाय मेरे लिए कोई और उपाय नहीं है। सबने मेरी ओर से दृष्टि फेर ली है। इन सबमें मुझे आपके अतिरिक्त कोई और दिखाई नहीं देता। आपकी अपार शक्ति के बिना यह उद्धार किसी से संभव नहीं। अब जो भी होगा, आपकी कृपा और दया से ही होगा। हे प्रभु! मुझे अपने चरणों में शरण दीजिए।

CIMS भोपाल की "ड्राइव अगेंस्ट कैंसर" स्टेज ज़ीरो कैंसर अवेयरनेस कार रैली सफलतापूर्वक संपन्न

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

कॅरियर इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (CIMS), भोपाल द्वारा आयोजित स्टेज ज़ीरो कैंसर अवेयरनेस कार रैली "ड्राइव अगेंस्ट कैंसर" सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस रैली का उद्देश्य आमजन में कैंसर के प्रति जागरूकता फैलाना और इसकी शुरुआती अवस्था में पहचान के महत्व को समझाना था। इस नेक उद्देश्य से हमेशा जुड़े रहने वाले श्री ए.एस. सिंहदेव विशेष रूप से उपस्थित रहे और उन्होंने कार रैली में पहली गाड़ी चलाकर रैली का नेतृत्व किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. हमीदुज़्ज़फर घोरी, एचओडी एवं प्रोफेसर, रेडिएशन ऑन्कोलॉजी विभाग, गांधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल उपस्थित रहे, जबकि गेस्ट ऑफ ऑनर अपेक्शा डाबराल श्रीवास्तव (यूनिवर्सल वूमन इंडिया 2024) ने भी आयोजन की शोभा बढ़ाई।

इस कार रैली के रूट की रूपरेखा और संपूर्ण आयोजन प्रबंधन Genius – The Creative Group द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ, जिसमें चार अलग-अलग श्रेणियों में विजेताओं को सम्मानित किया गया। ओपन क्लास में चित्रा मनवानी एवं उनके पुत्र आयुष, कैंसर कॉन्करर श्रेणी में मधु गुप्ता एवं उनके पुत्र विशाल, ऑर्गनाइजिंग पार्टनर श्रेणी में ब्लिस फाउंडेशन के भारत गांधी, तथा स्टाफ श्रेणी में सोनी टोप्पो विजेता रहे। यह रैली समाज में यह सशक्त संदेश देने में सफल रही कि समय पर जांच, जागरूकता और सकारात्मक सोच से कैंसर को हराया जा सकता है।

रविदास जयंती पर संस्कार, साधना और समाज निर्माण का समन्वित संदेश

गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में ऐतिहासिक बन रहा "आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी" अभियान

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

रविदास जयंती के पावन अवसर पर अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में तथा गायत्री शक्तिपीठ भोपाल के नेतृत्व में युवा प्रकोष्ठ द्वारा परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के सप्त आंदोलनों के अंतर्गत "आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी" विषय पर एक महत्वपूर्ण विचार–गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह अभियान भविष्य में निरंतर चलने वाला एक ऐतिहासिक सामाजिक–आध्यात्मिक आंदोलन बनता जा रहा है।

यह विचार–गोष्ठी अश्वमेध हॉल, गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में संपन्न हुई, जिसका शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ।

कार्यक्रम में श्री राजेश पटेल जी (व्यवस्थापक), श्री अमर धाकड़ जी (सह-समन्वयक), श्री ओ.पी. तिवारी जी, श्री श्याम शर्मा जी एवं दीदी मधु श्रीवास्तव जी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

अपने विचार रखते हुए दीदी मधु श्रीवास्तव जी ने कहा कि संस्कारवान पीढ़ी के निर्माण के लिए सबसे पहले स्वयं को प्रशिक्षित एवं संस्कारित करना आवश्यक है। आत्म-परिष्कार के बिना समाज निर्माण संभव नहीं है।

श्री ओ.पी. तिवारी जी ने कहा कि इस आंदोलन की आधारशिला साधना, स्वाध्याय एवं समयदान है। जब तक व्यक्ति स्वयं साधना से नहीं जुड़ता, तब तक स्थायी परिवर्तन नहीं आ सकता।

श्री अमर धाकड़ जी (सह-समन्वयक) ने इसे निरंतर चलने वाला अभियान बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इसे योजनाबद्ध ढंग से आगे बढ़ाया जाएगा।

वहीं श्री राजेश पटेल जी ने कहा कि चिंतन, प्रशिक्षण एवं कार्यान्वयन—इन तीनों को साथ लेकर चलने से ही "आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी" आंदोलन प्रभावी एवं सफल बनेगा।

इसी क्रम में माताजी की जन्म शताब्दी एवं अखंड दीप स्थापना शताब्दी वर्ष के अवसर पर चेतना केंद्र, लालघाटी, बैरागढ़ कला (भोपाल) में पंचकुंडी गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया।महायज्ञ में बड़ी संख्या में साधक, श्रद्धालु, महिलाएं एवं युवा सहभागी बने। वेद मंत्रों के उच्चारण, गायत्री मंत्र जप एवं यज्ञ आहुतियों के माध्यम से संपूर्ण क्षेत्र आध्यात्मिक ऊर्जा से आलोकित हो उठा। इस आयोजन के माध्यम से युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा लिखित साहित्य प्रतिपादित युग चेतना, नैतिक मूल्यों एवं आध्यात्मिक उत्थान के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। साहित्य स्टाल लगाया गया।

कार्यक्रम में युवा प्रकोष्ठ की ओर से डॉ. समेले जी, श्री अमरीश पाठक जी, श्री अभिषेक जी, श्री शिवदयाल जी, श्री पंकेश जी, श्री अनमोल जी सहित संपूर्ण युवा टीम की सक्रिय सहभागिता रही। ऐतिहासिक अभियान की ओर अग्रसर कार्यक्रम के अंत में "आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी" अभियान को केंद्र में रखते हुए गहन चिंतन–मंथन किया गया तथा स्वयं को प्रशिक्षित करते हुए इसे भविष्य में निरंतर चलने वाले ऐतिहासिक आध्यात्मिक–सामाजिक आंदोलन के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया गया।

मातृभाषा समारोह में उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक परिषद की भव्य प्रस्तुति

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा समारोह–2026 के अंतर्गत मातृभाषा मंच भोपाल द्वारा दशहरा मैदान में आयोजित तीन दिवसीय वृहद एवं भव्य आयोजन में उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक परिषद, बीएचईएल भोपाल ने भोजपुरी भाषाई समाज की मातृशक्तियों एवं बालिकाओं की सहभागिता से अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया। परिषद की ओर से पूर्वी, भोजपुरी एवं बुंदेली बोलियों पर आधारित कजरी, झूमर और मेघ मल्हार लोकगीतों पर केंद्रित समेकित लोकनृत्य प्रस्तुति ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम के माध्यम से भारत की विविध भाषाओं, बोलियों, परंपराओं और तीज-त्योहारों की जीवंत झलक देखने को मिली। बुंदेली सोहर, जो उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में विवाह एवं संतान जन्म जैसे शुभ अवसरों पर गाया जाने वाला पारंपरिक लोकगीत है, ने क्षेत्रीय संस्कृति का सजीव चित्र प्रस्तुत किया। वहीं सावन माह में गाए जाने वाले

कजरी गीतों के माध्यम से महिलाओं के जीवन, अनुभवों और भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई। वर्षा ऋतु की अनुभूति जगाने वाले मेघ मल्हार राग और पारंपरिक लोकशैली झूमर ने प्रस्तुति को और अधिक प्रभावशाली बनाया।

उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक परिषद के सचिव सुनील विश्वकर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम में रोमा सिंह, नेहा मौर्या, सौम्या मौर्या, संगीता मौर्या, प्रिया दास, सुचिता मल्ल, रितु पाण्डेय, सरिता कन्नौजिया तथा बालिकाओं में आरोही सिंह, आयुषी मौर्या और अंजलि विश्वकर्मा ने शानदार प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की कोरियोग्राफी रोमा सिंह द्वारा की गई। कार्यक्रम में परिषद के अध्यक्ष राम प्रताप मौर्या की विशेष उपस्थिति रही। साथ ही रजनीकांत चौबे, अनिल मौर्या, धनंजय तिवारी, चंदन सिंह, विनय सिंह, लवकुश मौर्या, अभिमन्यु पाण्डे, विनोद मौर्या, श्री रामजनक मौर्या, जगतनारायण सिंह, प्रद्युम्न प्रजापति, संदीप राय एवं संजय कुमार कन्नौजिया की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। परिषद के संरक्षक श्री दिनेश कुमार त्रिपाठी एवं श्री दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रतिभागियों को शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

परिषद के पदाधिकारी रामनारायण गिरी, रंजीत सिंह, संजय गुप्ता, शमशुल हक, रमेश सिंह एवं मनोरंजन कुमार का कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा। मातृभाषा मंच की ओर से श्री अमिताभ सक्सेना, श्री विनोद, श्री हरीश, श्री अर्पित जोशी एवं श्री सतेंद्र कुमार का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर मातृभाषा मंच द्वारा सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक परिषद की इस प्रस्तुति को दर्शकों ने खूब सराहा और यह आयोजन मातृभाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में एक सार्थक प्रयास सिद्ध हुआ।

अब 'विश्व व्यवस्था' नहीं, शक्ति का खेल

यदि यूरोप का अतीत कलंकित है, तो अमेरिका का इतिहास रणनीतिक भूलों से भरा है। उसने ही साम्राज्यवादी चीन के विश्व उदय का रास्ता खोला था। वर्ष 1999 में व्यापार समझौता और 2001 में 'विश्व व्यापार संगठन' में प्रवेश दिलाकर अमेरिका ने चीन को उत्पादन का वैश्विक केंद्र बना दिया। तब चीन की जीडीपी 1.2 ट्रिलियन डॉलर थी, जबकि अमेरिका की 10.3 ट्रिलियन। आज वही चीन 19.5 ट्रिलियन डॉलर के साथ अमेरिका के करीब पहुंच गया है, हर कुछ दशकों में, जब वैश्विक अस्थिरता बढ़ती है, तब एक परिचित शब्द सुनाई देने लगता है— विश्व व्यवस्था (वर्ल्ड ऑर्डर)। हालिया दिनों में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के कुछ तल्ख बयानों और हैरानी भरे कदमों के बाद यह शब्दवली फिर चर्चा में है। अब इसे "नई विश्व व्यवस्था" के रूप में पेश किया जा रहा है। लेकिन इतिहास साक्षी है कि ऐसी कोई स्थायी वैश्विक व्यवस्था कभी नहीं रही। न पहले इसका कोई वजूद था, न आज है, और न ही यह निकट भविष्य में कभी बनेगा। यह विचार सुनने में भले ही आकर्षक हो, लेकिन वास्तविक शक्ति-संतुलन की कठोर सच्चाइयों से दूर एक कोरी-कल्पना है। असल दुनिया में हमेशा एक बात का वजन होता है और वह शक्तिशाली का कमजोर पर प्रभुत्व है, जिसे अक्सर कानून, नैतिकता, सभ्यता और मानवाधिकार की ओट में ढक दिया जाता है। बीते 20 जनवरी को ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया मंच पर एआई निर्मित एक विवादित तस्वीर साझा की। उसमें उन्होंने कनाडा, ग्रीनलैंड और वेनेजुएला को अमेरिकी क्षेत्र के रूप में दिखाया। वह तस्वीर अमेरिकी राष्ट्रपति के कार्यालय की थी, जिसमें शीर्ष यूरोपीय नेताओं की भी मौजूदगी थी। अब अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा यह पोस्ट कोई शरारत भरी हरकत नहीं थी, बल्कि इसके पीछे बहुत सोचा-समझा और गूढ़ राजनीतिक संदेश छिपा था। कुछ दिन पहले, 8 जनवरी को ट्रंप ने 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' को साक्षात्कार देते हुए कहा था: "मुझे किसी अंतरराष्ट्रीय कानून की जरूरत नहीं; मेरी शक्ति की सीमा सिर्फ मेरी नैतिकता है।" यह संकेत इतिहास के संदर्भ में विडंबनाओं से भरा है, क्योंकि अमेरिका खुद साम्राज्यवादी नियंत्रण के खिलाफ विद्रोह से पैदा हुआ वह देश है, जो पहले ही अमेरिकी महाद्वीप पर बाहरी अधिकार की भयावह क्रूरता को झेल चुका था। 1492 में इतालवी क्रिस्टोफर कोलंबस ने स्पेन के ईसाई राजा के लिए अमेरिका की "खोज" की। लंबी समुद्री यात्रा करके अमेरिका पहुंचे कोलंबस का वहां जिन मूल निवासियों ने स्वागत किया, उन्हें और उनकी 'पेगन' संस्कृति-सभ्यता को मजहब के नाम पर मिटाकर अमेरिकी संग्रहालय में शोभा बढ़ाने की वस्तु तक गौण कर दिया है। सदियों बाद संभवतः पहली बार यूरोप खुद अपने द्वारा स्थापित साम्राज्यवादी हनक को महसूस कर रहा है। ट्रंप की "साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं" की आलोचना उसी यूरोपीय महाद्वीप से आ रही है, जिसका इतिहास ही आक्रमण, औपनिवेश और नस्लीय भेदभाव से भरा है। फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने स्विट्जरलैंड स्थित दावोस में 'विश्व आर्थिक मंच' से ट्रंप को घेरते हुए कहा था, "यह नए साम्राज्यवाद का समय नहीं है।" ये वही फ्रांस है, जो आज भी कैरेबियाई क्षेत्र से हिंद महासागर तक कई क्षेत्रों का अपना प्रशासन चलाता है। नाम भले ही बदल गया हो, लेकिन शासन करने का नजरिया अब भी वही संरक्षणवादी है। इसी कारण फ्रांस के पास दुनिया में सबसे अधिक 12-13 'समय मंडल' (टाइम जोन) हैं। अल्जीरिया में फ्रांसीसी शासन के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम (1954–62) में लगभग 15 लाख लोग मारे गए थे। वर्तमान यूरोप की बेचैनी दावोस से पहले ही दिख रही थी। जर्मनी के वित्तमंत्री ने चेतावनी दी कि वे ट्रंप के दबाव के आगे नहीं झुकेंगे। वही फ्रांसीसी वित्तमंत्री के अनुसार, 250 साल पुराने सहयोगी अब शुल्क को हथियार बना रहे हैं। वही कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने विश्व व्यवस्था को "एक सुखद भ्रम का अंत" बताया है। सच तो यह है कि तथाकथित 'विश्व व्यवस्था' कभी सार्वभौमिक नैतिक समझौता नहीं रहा, बल्कि यह नियम बनाने वालों के हित में बनी शक्तिशालियों का अग्रिम उपक्रम था। इसलिए पश्चिमी दुनिया के मुंह से नैतिकता की बात करना छलावा जैसा है। पुर्तगाली वास्को डी गामा और स्पेनवासी जेसुइट मिशनरी फ्रांसिस जेवियर आदि के 16वीं शताब्दी में भारत पहुंचने का घोषित लक्ष्य स्थानीय पूजा-पद्धति को मिटाकर ईसाइयत का विस्तार करना था। इसमें हिंदुओं, मुसलमानों और स्थानीय ईसाइयों पर जो उत्पीड़न हुआ— उसका नृशंस इतिहास है। 'गोवा इनक्विजिशन' उसका एक भयावह रूप है, जिसमें असंख्य स्थानीय लोगों की जीवित रहते जीभ काट दी और चमड़ी उधेड़ ली गई थी। कई प्रामाणित लेखकों के साथ संविधान निर्माता डॉ। भीमराव रामजी अंबेडकर के साहित्य में भी इन सभी निर्मम घटनाओं का स्पष्ट उल्लेख है। वैटिकन और कैथोलिक चर्च दुनिया के कुछ हिस्सों (कनाडा सहित) में अपने 'अपराधों' पर खेद जता चुका है, जो कोई पश्चाताप न होकर केवल छवि सुधार का हिस्सा है। यदि यूरोप का अतीत कलंकित है, तो अमेरिका का इतिहास रणनीतिक भूलों से भरा है। उसने ही साम्राज्यवादी चीन के विश्व उदय का रास्ता खोला था। वर्ष 1999 में व्यापार समझौता और 2001 में 'विश्व व्यापार संगठन' में प्रवेश दिलाकर अमेरिका ने चीन को उत्पादन का वैश्विक केंद्र बना दिया। तब चीन की जीडीपी 1.2 ट्रिलियन डॉलर थी, जबकि अमेरिका की 10.3 ट्रिलियन। आज वही चीन 19.5 ट्रिलियन डॉलर के साथ अमेरिका के करीब पहुंच गया है, जिसका तिब्बत पर कब्जा है, कई देशों (भारत सहित) से चीन का सीमा (समुद्री क्षेत्र सहित) विवाद है और अपनी दूषित कर्ज-नीति से श्रीलंका जैसे कुछ देशों को तबाह कर चुका है। अमेरिका दशकों से ताकत दिखाता रहा है। वियतनाम, इराक, अफगानिस्तान और वेनेजुएला— इसके प्रमाण है। 1980 के दशक में अमेरिका ने अफगानिस्तान में तत्कालीन सोवियत के खिलाफ जिन मुजाहिद्दीनों को पैदा किया, बाद में उन्हीं से तालिबान के रूप में उसे लड़ना पड़ा और फिर दो दशक बाद उन्हीं तालिबानियों से समझौता करके अपने हथियारों को छोड़कर वापस चलता बना। लेकिन अमेरिका में लोकतंत्र है, चुनाव होते हैं और अदालतें हैं— इसलिए वहां सुधार की संभावना अधिक है। परंतु चीन में ऐसा नहीं है। वहां सत्ता केंद्रीकृत है, विरोध-असहमति की जगह नहीं। इसी कारण चीन का उदय अधिक चिंताजनक है।

-बलबीर पुंज

सड़ांध में तब्दील हो रही आचरण संहिता!

कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने क्या किया? उन्होंने राज्य सरकार द्वारा तैयार किए गए भाषण की सिर्फ़ तीन पंक्तियां पढ़ीं और बाकी के 11 पैराग्राफ पढ़ने से इनकार करते हुए सदन से बहिर्गमन कर दिया। राज्यपालों के भाषण के वक़्त सदन के सदस्यों का बहिर्गमन तो देखा था, लेकिन इस बार हम ने राज्यपाल के बहिर्गमन का दृश्य देखा। मसला नरेंद्र भाई बनाम राहुल का नहीं है। उस से बहुत बड़ा है। सड़ांध में तेज़ी से तब्दील हो रही आचरण संहिता का है। राजकीय और औपचारिक समारोहों में गणमान्य व्यक्तियों के बैठने के क्रम को निर्धारित करने वाली एक सरकारी सूची है। बाकी सभी तरह के शासकीय शिष्टाचार निभाने में भी इसी वरीयता सूची के मुताबिक तरज़ीह दी जाती है, जिस में सब से पहला क्रम राष्ट्रपति का होता है, दूसरा उपराष्ट्रपति का, तीसरा प्रधानमंत्री का, चौथा राज्यपालों का (अपने-अपने राज्य के भीतर), पांचवा पूर्व राष्ट्रपति और उपप्रधानमंत्री का, छटा प्रधान न्यायाधीश और लोकसभा अध्यक्ष का और सातवां केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री (अपने-अपने प्रदेश के भीतर), पूर्व उपराष्ट्रपति, पूर्व प्रधानमंत्री और लोकसभा तथा राज्यसभा में विपक्ष के नेता का। सो, क्या नरेंद्र भाई मोदी की सरकार से यह पूछना बेकार का होहल्ला मचाना माना जाएगा कि गणतंत्र दिवस की परेड में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी को किस आधार पर तीसरी कतार में बिठाया गया था? उन के साथ यह पहली बार नहीं हुआ है। स्वतंत्रता दिवस के लालकिला समारोह में भी उन्हें पांचवी-छटी कतार में बिठाने का सरकारी ओछापन देश पहले देख चुका है। ठीक है कि राहुल को इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है कि उन्हें किस कतार में जगह दी जाती है। मगर विपक्ष के नेता को जानबूझ कर नीचा दिखाने की इन हरकतों से सत्तासीन दल के चाल, चरित्र और चेहरे का आकलन करने वाले क्या इस छिछोरपंती को धिक्कारते नहीं होंगे? एक व्यक्ति के नाते राहुल किसी की भी नज़र में कुछ भी हो सकते हैं – अज्ञानी, नासमझ, निरक्षर, अल्पज्ञ, असंस्कृत, वग़ैरह, वग़ैरह। मगर वे लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता हैं और उस नाते तय वरीयता क्रम का पालन उन के मामले में होना चाहिए या नहीं? इसी तरह नरेंद्र भाई को ले कर भी किसी की कुछ भी राय हो सकती है – अक्खड़, उच्छृंखल, स्वेच्छाचारी, निरंकुश, अहंकारी, ढीठ, वग़ैरह, वग़ैरह। लेकिन क्या उन्हें प्रधानमंत्री पद के लिए तय मान-प्रतिष्ठा, आवभगत और रुतबा देने से इनकार करना तुच्छता नहीं होगी?

सवाल यह नहीं है कि कौन प्रतिपक्ष का नेता बनने के लायक है या नहीं है। बिलकुल उसी तरह जैसे कि कोई प्रधानमंत्री या गृह मंत्री या वित्त मंत्री या विदेष मंत्री या लोकसभा अध्यक्ष आदि बनने के लायक है या नहीं। मुद्दा तो यह है कि अगर कोई भी किसी पद के लिए नामित हो चुका है तो उस पद से जुड़े शिष्टाचार नियमों और परंपराओं का पालन किसी भी सरकार को और उस के कारकूनों को करना चाहिए या नहीं? क्या राजनीतिक असहमतियों को सार्वजनिक जीवन में शिष्टाचार के शासकीय नियमों या स्थापित निजी परंपराओं की जड़ें खोदने की अनुमति दी जा सकती है?

पिछले कुछ वर्षों में संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों द्वारा संविधान में उल्लिखित नियमों और परंपराओं की खुलेआम अवहेलना करने की प्रवृत्ति तेज़ी से बढ़ी है। मसलन, हर साल के शुरुआती विधानसभा सत्र में राज्यपालों के अभिभाषण होते हैं। उन के इस भाषण का मसविदा संबंधित प्रदेशों की सरकारें तैयार करती है। संविधान के अनुच्छेद 176 और 163 के तहत राज्यपालों को यह भाषण अक्षरशः पढ़ना होता है और वे इस में किसी भी तरह का संशोधन या काट-छांट नहीं कर सकते हैं। वे इसे जस-का-तस पढ़ने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि अभिभाषण राज्यपाल के निजी नज़रिए को नहीं, बल्कि मंत्रिपरिषद की नीतियों को ज़ाहिर करने के लिए दिया जाता है। मगर अभी-अभी कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने क्या किया? उन्होंने राज्य सरकार द्वारा तैयार किए गए भाषण की सिर्फ़ तीन पंक्तियां पढ़ीं और बाकी के 11 पैराग्राफ पढ़ने से इनकार करते हुए सदन से बहिर्गमन कर दिया। राज्यपालों के भाषण के वक़्त सदन के सदस्यों का बहिर्गमन तो देखा था, लेकिन इस बार हम ने राज्यपाल के बहिर्गमन का दृश्य देखा। तमिलनाडु के राज्यपाल एन. रवि को हम पिछले चार साल से लगातार अभिभाषण के ज़्यादातर हिस्सों को पढ़ने से इनकार करते हुए और सदन से बीच में ही बाहर जाते देख रहे हैं। केरल के राज्यपाल राजेंद्र आर्लेकर ने भी इस साल का अपना अभिभाषण पूरा नहीं पढ़ा और दो साल पहले राज्यपाल आरिफ़ मुहम्मद खान ने भी 61 पन्नों के अपने अभिभाषण का सिर्फ़ पहला और अंतिम पैराग्राफ ही पढ़ा था। चार साल पहले जब जगदीप धनखड़ पश्चिम बंगाल के राज्यपाल थे तो वे भी अपना भाशण कभी पूरा नहीं पढ़ा करते थे और एक बार तो उन्होंने अभिभाषण के 25 पन्नों में से महज़ एक वाक्य पढ़ा और चलते बने। राज्यपालों के इस रवैए को आप कितना जायज़ ठहराएंगे?

अब इस प्रहसन के दूसरे दृश्य को देखिए। क़ानून भले न हो, मगर रिवाज़ है कि प्रधानमंत्री जब भी किसी प्रदेश में जाएंगे तो वहां के मुख्यमंत्री विमानतल पर उन की अगवानी करेंगे। अगर वे बीमारी या किसी बेहद निजी पारिवारिक व्यस्तता की वजह से ख़ुद जाने में असमर्थ हैं तो अपने किसी वरिष्ठ मंत्री को प्रधानमंत्री का इस्तकबाल करने भेजेंगे। लेकिन 2022-23 में तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने कम-से-कम पांच बार ऐसा किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई की अगवानी के लिए विमानतल नहीं गए। एक बार जुलाई 2022 में वे राष्ट्रपति पद के विपक्षी प्रत्याशी यशवंत सिन्हा के स्वागत को तो सुबह विमानतल गए, मगर कुछ घंटों बाद जब नरेंद्र भाई उसी विमानतल पर पहुंचे तो केसीआर को बुखार हो गया और वे प्रधानमंत्री की अगवानी के लिए नहीं गए। जनवरी 2020 में ममता बनर्जी ने भी नरेंद्र भाई की विमानतल पर अगवानी से मना कर दिया था। उन्होंने अपने एक राज्यमंत्री को प्रधानमंत्री के स्वागत के लिए भेजा। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्तालिन ने पिछले साल अप्रैल में प्रधानमंत्री के किसी भी कार्यक्रम में शिरकत नहीं की। अगस्त 2023 में कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दारमैया भी नरेंद्र भाई को लेने विमानतल नहीं पहुंचे और बाद में प्रधानमंत्री कार्यालय ने यह कह कर अपनी नाक बचाई कि चूंकि प्रधानमंत्री को सुबह-सुबह छह बजे बंगलूर पहुंचना था, इसलिए मुख्यमंत्री से हम ने ख़ुद ही कहा था कि उन्हें इतनी सुबह विमानतल पहुंचने की ज़हमत उठाने की ज़रूरत नहीं है। विरोध ज़ाहिर करने के मक़सद से प्रधानमंत्री के स्वागत के लिए मुख्यमंत्रियों के विमानतल नहीं जाने का यह छोटापन दिखाने की शुरुआत साठ के दशक में चौधरी चरण सिंह ने की थी। तब वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे और प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को लेने जाने से उन्होंने खुलेआम यह कह कर इनकार कर दिया था कि मेरे राजनीतिक विचार उन के विचारों से मेल नहीं खाते हैं, इसलिए मैं उन की अगवानी के लिए नहीं जाऊंगा। मई 2003 में तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता ने भी प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की अगवानी के लिए जाने से मना कर दिया था।

मुख्यमंत्रियों के इस रवैए को भी आप कितना जायज़ ठहराएंगे? क्या यह एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति की अगवानी के लिए जाने-न-जाने का मामला है या संवैधानिक पद पर बैठे एक चेहरे के अपने से वरिष्ठ संवैधानिक पद पर बैठी दूसरी शख्सियत के ख़ैर-मक्दम का दस्तूर? रिवायतों के प्रति बेअदबी का यह भाव जिन्हें भारतीय जनतंत्र को मजबूत बनाने वाला लगता है, उन्हें फ़र्शी सलाम करिए। लेकिन इतना समझ लीजिए कि इस तरह की फ़ितरत को बढ़ावा देने वालों पर आने वाली नस्लें नाज़ नहीं करेंगी, बेतरह शर्मिंदा महसूस करेंगी। सो, मसला नरेंद्र भाई बनाम राहुल का नहीं है। उस से बहुत बड़ा है। सड़ांध में तेज़ी से तब्दील हो रही आचरण संहिता का है।

-पंकज शर्मा

मौका भारत का, पर चीन बढ़ेगा!

यूरोपीय संघ से भारत का सौदा एक छप्पर-फाड़ अवसर है। यदि प्रधानमंत्री मोदी गंभीरता से अपने सचिवों से 27 यूरोपीय देशों, ब्रिटेन, न्यूज़ीलैंड आदि के साथ हुए मुक्त व्यापार समझौतों के मुताबिक बाज़ार खुलवाएं, प्रक्रिया-कायदे आसान बनवाएं तो भारत के लिए अवसर ही अवसर हैं। वैसा ही समय है जब चीनी नेता देंग ने अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन से सौदा पटा कर चीन को दुनिया की फैक्ट्री बनाना शुरू किया था। भारत का वैसी फैक्ट्री बनना न संभव है और न ज़रूरी। भारत का लक्ष्य इतना भर रहे कि संभावी 170-180 करोड़ लोगों की आबादी की बेसिक आवश्यकताओं में वह आत्मनिर्भर बने। पर तभी यह संभव है जब प्रधानमंत्री मोदी सब कुछ नौकरशाही व अंबानी-अडानी पर न छोड़ें। यूरोपीय संघ के साथ करार हो चुका है लेकिन अमल में ढेरों बाधाएं हैं। 27 यूरोपीय देशों की संसदों, फिर यूरोपीय

संसद का ठप्पा आसान है जबकि दिल्ली के नौकरशाहों और क्रोनी पूंजीपतियों की लालफीताशाही व स्वार्थों की नीति व नीयत अंडगे वाली है। इसलिए अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के बदौलत बने नए वैश्विक अवसरों में चीन बाज़ी मारता हुआ है। जैसे यूरोपीय संघ के नेताओं ने भारत से समझौते में जल्दी दिखाई वैसे ही वे चीन से भी सौदा पटा रहे हैं। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चीन यात्रा पर हैं। उससे पहले चीन ने लंदन में विशाल दूतावास की इमारत बनाने की अनुमति ली। ऐसे ही कनाडा के प्रधानमंत्री बीजिंग गए तो चीन के राष्ट्रपति ने कनाडा में अपने स्वार्थ के तुरंत फैसले करवाए। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और उनकी नौकरशाही फुर्ती से ट्रंप के बनवाए अवसरों का लाभ उठा रहे हैं। इस सप्ताह सोने के भाव में यदि ज़्यादा ही तेज़ी रही तो वजह चीन की खरीदारी है। चीन अपनी करेंसी का भविष्य बना रहा है जबकि भारत का रुपया दबाव में और लुढ़कता हुआ है। बावजूद इस हकीकत के मोदी सरकार शायद ही समझे कि मुक्त व्यापार संधि वाले यूरोप, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड के लिए कैसे भारत को आसान बनाए? भारत के बाज़ार में चीन जैसा छाया है उसके आगे कैसे पश्चिमी कंपनियों के धंधे, पूंजी निवेश के रास्ते निकलें?

-हरिशंकर व्यास

मोदी को न अगड़े, न दबंग और न शंकराचार्य चाहिए!

इस सप्ताह मुझे 'हिंदुओं का खुदा खैर करे' लाइन ने झिंझोड़ा तो यह चौंकाने वाला था कि यूपी सरकार ने शंकराचार्य से पूछा कि वे पहले शंकराचार्य होना तो साबित करें! फिर मालूम हुआ कि मोदी सरकार ने कॉलेज-विश्वविद्यालयों को अगड़े नौजवानों के लिए खौफ का परिसर बना दिया है! मतलब मोदी सरकार ने युवा शक्ति को पढ़ो नहीं, जात में जियो का मंत्र दिया। ब्राह्मण-ठाकुर-कायस्थों आदि के फारवर्ड लड़कों के लिए सरकार ने वह नियम-कायदा बनाया कि पहले जात की पहचान पाओ फिर डिग्री लो!

सो, हिंदुओं का खुदा खैर करे! हिसाब से मोदी सरकार को हिंदुओं के नरक बने बांग्लादेश पर फोकस बनाना था। पर प्रधानमंत्री मोदी की राजनीति का मूल मंत्र शुरू से वही रहा है जैसा लॉर्ड कर्ज़न, अंग्रेज राज का था, बांटो और राज करो! हां, यही सन् 2000 से 2026 के भारत परिवर्तन का राजनीतिक मंत्र है। उनकी सफलता का कुल निचोड़, बॉटम लाइन क्या है? धंधे की तराजू को तिलक, तलवार, दबंग, शंकराचार्य नहीं चाहिए बल्कि व्यापार, मुनाफे की सियासी गणित चाहिए! ध्यान रहे यही हिंदुओं की गुलामी की नियति का कारण रहा है। जब सत्ता व राजनीति (याद करें ईस्ट इंडिया कंपनी, जगत सेठ, मौजूदा अंबानी-अडानी को) धंधे के पलड़े में कन्वर्ट हो जाए तो दूसरे पलड़े में फिर इंसानों का नहीं मेंढकों का हिसाब है!

ईस्ट इंडिया कंपनी ने हिंदुस्तान को समझ लोगों को न केवल जात-पांत में बांटा, बल्कि सत्ता के लिए खरबपति जगत सेठ का भी उपयोग किया। सूबे-रजवाड़े में फ़साद बनाए। शक्तिमान-बुद्धिमानों को जड़ से उखाड़ बेघर किया। चारों तरफ कठपुतलियां बैठाईं। बंगाल, बंगाल नहीं रहा। पंजाब, पंजाब नहीं रहा! मद्रास, मद्रास नहीं रहा। शिक्षा बदली, धंधे की तासीर बदली, भाषा, संस्कृति, लोकाचार बदला!

वैसे ही पिछले बारह वर्षों में हिंदू के नाम पर क्या नरेंद्र मोदी-अमित शाह ने नहीं किया है? वह सब किया, जिससे देश में

दूसरा कोई दबंग (राजनीति से कूटनीति, उद्यम, ज्ञान-विज्ञान हर क्षेत्र में) नेता व नेतृत्वकर्ता न बचे, न उगे। दिमाग, भाषा, व्यवहार, धर्म, समझ व नैरेटिव सभी बदल नागरिकों को भीड़ बना डाला।

किसलिए? ताकि सियासी तराजू में वोटों का उनका पलड़ा भारी बना रहे। इसलिए नरेंद्र मोदी के हिसाब में अगड़े वोट की चिंता नहीं है, न संघ की ज़रूरत है क्योंकि ये सब हिंदू के नाम पर वैसे ही बंधुआ हैं। ऐसा ही सन् 2000 से 2014 के बतौर मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में भी हुआ था। गुजरात में सन् 2000 से पहले पटेल, देसाई, ओझा, वाघेला यानी अगड़े चेहरे नेता और मुख्यमंत्री होते थे। अगड़ी जातियों के नेता जाति विशेष में रसूख तथा सार्वजनिक जीवन के लोकनायक के नाते गुजरातियों में हिट थे। इन्हीं नेताओं से जनसंघ ने गुजरात को अपने रंग में रंगा। संघ के जिन चेहरों से (चंद्रकांत शुक्ला, शंभु महाराज, केशुभाई, केशुराव देशमुख, दत्तोपंत ठेंगड़ी, मकरंद देसाई, शंकर सिंह वाघेला, केशुभाई पटेल, राणा आदि) नवनिर्माण आंदोलन के ज़रिए प्रदेश में जनसंघ खड़ी हुई थी वे सब खांटी ज़मीनी नेता थे। सच्चे हिंदू थे। मेरा मानना है कि गुजरात के गठन से सन् 2000 में मुख्यमंत्री केशुभाई पटेल तक किसी ने भी तराजू पकड़ कर राजनीति नहीं की। कांग्रेस का नेता हो या जनसंघ-भाजपा का नेता, किसी ने करोड़पति सेठ को भाव नहीं दिया। सभी ने सामाजिक संतुलन, समरसता के समीकरणों में वोट का आधार बनाया। वह आधार अगड़े, दबंग नेताओं के वजूद से था। बाबूभाई, माधवसिंह, चिमनभाई, केशुभाई, वाघेला सभी ने वोटों के लिए जातियों के नेताओं को साथ में लेकर, उनसे साझा करके सरकारें चलाईं। तब कांग्रेस आलाकमान की भी चलती थी तो संघ के पदाधिकारियों की भी हैसियत थी। लेकिन नरेंद्र मोदी के शपथ लेते ही सब बदला। जनसंघ के तमाम पुराने दिग्गज नेताओं को ठिकाने लगाया। जात की राजनीति शुरू की। अगड़े नेताओं और जातियों का पुराना वर्चस्व बेहैसियत बनाया। ऐसा उन्होंने अपने को हिंदू नेता कहलवा कर, मुस्लिम-विरोधी इमेज से किया। इससे अगड़े हिंदू अपने-आप बंधुआ बने। फिर चुपचाप छोटी-छोटी जातियों, ओबीसी से अपना नाता जता वह जनाधार बनाया, जिससे उनकी एकक्षत्रता स्थापित हुई।

वही पैटर्न 2014 से राष्ट्रीय स्तर पर है। अब 2029 के चुनाव की तैयारी का रोडमैप उभरता हुआ है। जातीय जनगणना ज्यों ही पूरी होगी उनके आंकड़ों पर तराजू से नई राजनीति उभरेगी। इसका पहला स्थायी नुस्खा हिंदू अवतार के नाम पर अगड़ी जातियों व साधु-संतों के दिल-दिमाग में जस का तस पैठे रहना है। फिर मंडल राजनीति को हाशिए में डालना। गौर करें पिछले बारह सालों में उत्तर-पश्चिम भारत के यादव, जाट, गुर्जर, मीणा, मराठा, पटेल, दलित वोट व नेता-पार्टियां अब कितनी बदहाल हैं? रहा-सहा यूपी के 2027 चुनाव में खत्म होगा। बिहार में लालू परिवार तथा यादव लामबंदी या हरियाणा, पश्चिम यूपी, राजस्थान में जाट लामबंदी बेअर्थ खलास, तो मध्य प्रदेश अगड़े बेदखल, सत्ता से आउट। यूपी के अगले चुनाव में यादव, जाट, दलित वोट सब बेमतलब होने हैं। अखिलेश, मायावती निपट जाने हैं। मतलब ऊंची जातियों, मंडल की ताकतवर जातियों की दबंगई का खात्मा। इससे अपने-आप अतिपिछड़ों की छोटी-छोटी जातियों का वह संतोष है, जिससे उनके वोट सधते हैं।

आगे की जनगणना के बाद इन्हीं की संख्या व आर्थिक स्थिति के हवाले मोदी सरकार अतिरिक्त आरक्षण का फॉर्मूला फेंकेगी। नामुमकिन नहीं कि प्राइवेट नौकरियों में आरक्षण का फैसला हो। क्यों? ताकि 2029 के लोकसभा चुनाव में 400 सीट पार का मोदी हुंकारा सधे। आखिर उन्हें तीसरे टर्म में नेहरू के मुकाबले अपने को ज़्यादा दमदार जो कहलाना है। सोच सकते हैं फालतू बात। तो जाति जनगणना के बाद की राजनीति का इंतज़ार करें!

-हरिशंकर व्यास

यूरोप-भारत ट्रेड डील से बांग्लादेश बेचैन, मोहम्मद यूनुस ने EU से जल्द FTA के लिए लगाई गुहार, कपड़ा कारोबार में तबाही का डर

एजेंसी ढाका

भारत और यूरोपीय यूनियन के बीच फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (FTA) ने बांग्लादेश को बेचैन कर दिया है। देश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस ने यूरोपीय यूनियन से जल्द ट्रेड डील करने की गुहार लगाई है। मोहम्मद यूनुस की दफ्तर की तरफ से जारी एक बयान में कहा गया है कि 'मुख्य सलाहकार ने लगातार ड्यूटी-फ्री एक्सेस सुनिश्चित करने के लिए EU के साथ जल्द FTA बातचीत का आह्वान किया है।' मोहम्मद यूनुस ने बांग्लादेश में यूरोपियन यूनियन के राजदूत माइकल मिलर और बांग्लादेश में यूरोपियन चैंबर ऑफ़ कॉमर्स (EuroCham) की चेयरपर्सन नूरिया लोपेज से ढाका में मुलाकात की है।इस मुलाकात को लेकर बांग्लादेश की सरकार की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि "मुख्य सलाहकार प्रोफेसर मुहम्मद यूनुस ने रविवार को यूरोपियन यूनियन के साथ फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (FTA) बातचीत जल्द शुरू करने का आह्वान किया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आने वाले सालों में मौजूदा ड्यूटी-फ्री एक्सेस खत्म होने के बाद बांग्लादेश के सबसे बड़े एक्सपोर्ट मार्केट में उसकी व्यापार प्राथमिकताओं की रक्षा करना जरूरी है।" सरकारी बयान के मुताबिक "मुख्य सलाहकार ने ये बातें ढाका के स्टेट गेस्ट हाउस जमुना में बांग्लादेश में यूरोपियन चैंबर ऑफ़ कॉमर्स (EuroCham) की चेयरपर्सन नूरिया लोपेज़ की शिष्टाचार मुलाकात के दौरान कहीं। इस बैठक में बांग्लादेश में यूरोपियन यूनियन के राजदूत माइकल मिलर भी शामिल हुए थे।" मोहम्मद यूनुस ने इस दौरान कहा कि "बांग्लादेश में यूरोपीय निवेश को तेज करने की जरूरत, बांग्लादेश और EU के बीच सुचारू व्यापार संबंधों को कैसे सुनिश्चित किया जाए और देश के कारोबारी माहौल को बेहतर बनाने के लिए और सुधारों की जरूरत पर चर्चा की।" यूनुस ने कहा कि अंतरिम सरकार ने हाल ही में जापान के साथ एक आर्थिक साझेदारी समझौता (EPA) किया है, जिससे दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में 7,300 से ज्यादा बांग्लादेशी उत्पादों के लिए ड्यूटी-फ्री एक्सेस का रास्ता साफ हो गया है।" उन्होंने कहा कि "बांग्लादेश अन्य देशों, जिसमें यूरोपियन यूनियन भी शामिल है, उसके साथ इसी तरह की बातचीत करने की तैयारी कर रहा है, ताकि भविष्य में EU बाज़ार में अपने उत्पादों, खासकर रेडीमेड कपड़ों के लिए लगातार ड्यूटी-फ्री एक्सेस सुनिश्चित किया जा सके।" वहीं, यूरोचैम्ब चेयरपर्सन नूरिया लोपेज ने कहा कि "बांग्लादेश को तुरंत FTA बातचीत शुरू करने की जरूरत है, क्योंकि सबसे कम विकसित देश (LDC) का दर्जा खत्म होने के बाद देश EU, जो उसका सबसे बड़ा बाजारय है, वो अपनी मौजूदा व्यापार प्राथमिकताएं खो सकता है।"भारत-EU फ्री ट्रेड एग्रीमेंट से पाकिस्तान और बांग्लादेश के कपड़ा उद्योग पर सीधा असर पड़ने की आशंका है। बांग्लादेश को यूरोपीय बाजार में ड्यूटी फ्री एक्सेस सुविधा है, उससे बांग्लादेशी कपड़े काफी सस्ते हो जाते हैं। लेकिन अब भारत के पास भी वही सुविधा होगी और बांग्लादेश, भारत के प्रोडक्शन क्षमता और सप्लाई चेन का मुकाबला नहीं कर पाएगा। बांग्लादेश को अभी तक सबसे कम विकसित देशों (LDCs) के लिए "एवरीथिंग बट आर्म्स" (EBA) स्कीम के तहत बिना किसी टैरिफ के EU को कपड़े एक्सपोर्ट करता था। वहीं, भारतीय एक्सपोर्ट पर 9% से 12% का टैरिफ लगता था। लेकिन नए FTA के बाद भारतीय टेक्सटाइल, चमड़े और समुद्री प्रोडक्ट्स पर टैरिफ घटकर जीरो हो जाएगा। यानि भारत अब बराबरी के मैदान पर मुकाबला करेगा। अपने बड़े कच्चे कपास के बेस और इंटीग्रेटेड सप्लाई चेन के साथ, भारत बांग्लादेश से कम कीमतों पर सामान बेचेगा। 2029 के नवंबर महीने तक भारत के पास स्थिर, स्थायी जीरो-ड्यूटी एक्सेस होगा, जबकि बांग्लादेश पर भारी टैक्स लग सकता है, जिससे उसके प्रोडक्ट्स यूरोपीय खरीदारों के लिए काफी महंगे हो जाएंगे और उसका कपड़ा उद्योग, जो देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है, उसका करीब 50 प्रतिशत से ज्यादा कारोबार ही खत्म हो जाएगा।

नेपाल में क्या कर रहे ब्रिटिश खुफिया एजेंसी MI-6 के 'जासूस'? सरकार बनाने-गिराने में माहिर, लकी बिष्ट का बड़ा दावा

एजेंसी काठमांडू

नेपाल में ब्रिटेन के कुख्यात उद्योगपति लॉर्ड अशक्रॉफ्ट पिछले कुछ दिनों से मौजूद हैं। हालांकि कहने के लिए ये एक उद्योगपति हैं, लेकिन उनके ब्रिटिश खुफिया एजेंसी MI-6 से गहरे रिश्ते रहे हैं। नेपाल में पिछले साल एक हिंसक विरोध प्रदर्शन के बाद केपी शर्मा ओली की सरकार गिर गई थी। भारतीय खुफिया एजेंसी रॉ के पूर्व एजेंट लकी बिष्ट ने दावा किया है कि नेपाल के पोखरा इंटरनेशनल एयरपोरट पर पिछले तीन दिनों से एक प्राइवेज जेट मौजूद है, लेकिन नेपाल की सरकार को उसकी कोई जानकारी नहीं है। ये काफी सनसनीखेज है कि देश के एक बड़े एयरपोर्ट पर एक विमान है और सरकार को उसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। लकी बिष्ट वो एजेंट हैं, जिन्होंने कई महीने पहले ही नवभारत टाइम्स से बात करते हुए नेपाल में प्रदर्शन होने और सरकार गिरने की भविष्यवाणी कर दी थी। उनके पास नेपाल की राजनीति को लेकर गहरी समझ है। उन्होंने पिछले दिनों नवभारत टाइम्स से बात करते हुए कहा था कि 'काठमांडू के मेयर बालेन शाह' नेपाल के अगले प्रधानमंत्री होने वाले हैं। लेकिन अब उन्होंने नया दावा किया है कि MI-6 नेपाल में इन दिनों एक्टिव है। लकी बिष्ट ने एक वीडियो के जरिए दावा किया है कि "28 जनवरी 2026 से पोखरा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर एक प्राइवेट ब्लैक जेट खड़ा है और हैरानी की बात ये है कि नेपाल सरकार को इसकी कोई आधिकारिक जानकारी नहीं। आज भी पोखरा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का पूरा कंट्रोल चीन के पास है। इसी जेट से ब्रिटेन के बिजनेसमैन लॉर्ड अशक्रॉफ्ट नेपाल आए हैं जिन्हें सिर्फ उद्योगपति कहना आधा सच है। ये दुनिया भर में सरकारें बनाने-बिगाड़ने में भूमिका निभाते हैं और MI6 के एजेंट है।" उन्होंने आगे कहा है कि "इस वक्त उनकी नज़दीकियां केपी ओली से हैं, जिन्हें नेपाल की जनता सत्ता से बाहर कर चुकी है। 5 मार्च 2026 से नेपाल में दोबारा चुनाव होने जा रहे हैं। ऐसे संवेदनशील समय में लॉर्ड अशक्रॉफ्ट की मौजूदगी सिर्फ इत्तेफाक नहीं लगती। सवाल साफ है क्या नेपाल की राजनीति के पीछे कोई अदृश्य खेल खेला जा रहा है?" उन्होंने आगे दावा किया है कि "लॉर्ड अशक्रॉफ्ट एक बड़े बिजनेसमैन हैं, बड़ी बड़ी कंपनियों को खरीदते हैं, शेयर बाजार को ऊपर-नीचे करते हैं। लेकिन उससे भी बड़ी बात, जब भी किसी देश में चुनाव होने को होते हैं, ये MI6 की तरफ से उस देश में पहुंच जाते हैं। वहां की पार्टी को फंड करते हैं।" लकी बिष्ट ने वीडियो में दावा किया है कि "किस पार्टी को फंड करना है ये MI6 को पता है। ये बुद्धा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पूरा का पूरा चीन के कंट्रोल में है। क्योंकि केपी ओली की डील थी। चीन को हमेशा पता होता है कि एयरपोर्ट पर कौन आ रहा है कौन जा रहा है। तो लॉर्ड अशक्रॉफ्ट अभी भी नेपाल में हैं। 5 मार्च को नेपाल में इलेक्शन है और ये फिर से उसी सरकार को लेकर आना चाहते हैं, जिसे नेपाल की जनता ने उखाड़ कर फेंक दिया था।" नवभारत टाइम्स इसकी पुष्टि नहीं करता है कि लॉर्ड अशक्रॉफ्ट को लेकर लकी बिष्ट के दावे में कितना दम है, लेकिन लकी बिष्ट ने नवभारत टाइम्स पर नेपाल को लेकर जो भी दावे किए हैं, वो सच साबित हुए हैं।

पानी रुकने से सहमे पाकिस्तान की UN में भारत को गीदड़भभकी, दुनिया से मदद की गुहार

एजेंसी न्यूयॉर्क

पाकिस्तान की ओर से एक बार फिर संयुक्त राष्ट्र (UN) में सिंधु जल संधि (IWT) का मुद्दा उठाया है। यूएन में पाकिस्तान के राजदूत आसिम इफ्तिखार अहमद ने कहा कि भारत ने एकतरफा तरीके से सिंध संधि (IWT) को निलंबित किया है। इस पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय को ध्यान देना चाहिए क्योंकि इसके मानवीय, शांति और सुरक्षा पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इफ्तिखार ने भारत को गीदड़भभकी देते हुए कहा कि दिल्ली को इस पर आगे नहीं बढ़ना चाहिए।

बीते साल अप्रैल में पहलगाम के आतंकी हमले के बाद भारत ने घोषणा की थी कि वह पाकिस्तान के साथ 1960 में विश्व बैंक की मध्यस्थता में हुई IWT को स्थगित कर रहा है। IWT संधि सिंधु बेसिन की नदियों के पानी को भारत और पाकिस्तान के बीच बांटती है। भारत के कदम से पाकिस्तान के सामने जल संकट पैदा होने का खतरा मंडरा रहा है। इफ्तिखार अहमद ने शनिवार को यूएन में 'अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए संधियों की पवित्रता को बनाए रखने पर सुरक्षा परिषद की अरिया फॉर्मूला बैठक' में बोलते हुए कहा कि IWT को सबसे मजबूत जल-बंटवारे वाली संधियों में गिना जाता है। यह कई संकटों और राजनीतिक तनावों के बावजूद ये कायम रही लेकिन अब इस पर संकट है। इफ्तिखार ने आगे कहा कि स्थापित जल-बंटवारे की व्यवस्था में रुकावट के मानवीय, पर्यावरणीय और शांति-सुरक्षा पर गंभीर परिणाम होंगे। भारत का पानी को रोकना पाकिस्तान के 24 करोड़ लोगों के लिए मुश्किल पैदा करते हैं। लाखों लोगों की जीवन रेखाओं को इस तरह से मुश्किल में नहीं डाला जा सकता है। पाकिस्तानी दूत अहमद ने दोहराया कि यह संधि द्विपक्षीय चिंता नहीं है बल्कि अंतरराष्ट्रीय प्रणाली के लिए एक परीक्षा है। अगर विवादों या संघर्षों को रोकने के लिए बनाई गई संधि की एकतरफा अनदेखी की जाती है तो कोई भी समझौता वास्तव में राजनीति या सभी प्रकार की चालों से सुरक्षित नहीं है।

अहमद ने आगे कहा कि सीमाएं, विसैन्यीकृत क्षेत्र, व्यापार गलियारे और मानवीय व्यवस्थाएं सभी अधिक नाजुक हो जाती हैं। संयुक्त राष्ट्र और सुरक्षा परिषद की एक महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसमें एकतरफा निलंबन को रोकना और संधियों को लागू करना शामिल है। संधियों का पालन किया जाना जरूरी है। पाकिस्तान ने हालिया महीनों में भारत को बार-बार गीदड़भभकी दी है कि वह अपनी नदियों के प्रवाह को रोकने या मोड़ने नहीं देगा। इस्लामाबाद ने पिछले साल कहा था कि भारत की तरफ से उसके पानी के बहाव को रोकने की किसी भी कोशिश को एक्ट ऑफ वॉर माना जाएगा। यानी वह इसे युद्ध की शुरुआत मानेगा।

अमेरिका ने पाकिस्तान को दिखाई जमीन, ट्रंप को खनिज बॉक्स देने वाले मुनीर को मिनरल्स कॉन्फ्रेंस से किया आउट, जयशंकर को न्योता

एजेंसी इस्लामाबाद

भारत में पाकिस्तान के उच्चायुक्त रहे अब्दुल बासित ने शहबाज शरीफ और असीम मुनीर की अमेरिका नीति पर सवाल उठाए हैं। पाकिस्तान के वरिष्ठ राजनयिक अब्दुल बासित ने दावा किया है कि डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन ने इस्लामाबाद को ग्लोबल मिनरल कॉन्फ्रेंस का न्योता नहीं भेजा है, जबकि भारत इसमें शामिल होगा। यह इसलिए खास है क्योंकि बीते साल पाकिस्तानी आर्मी चीफ असीम मुनीर ने डोनाल्ड ट्रंप को बॉक्स देते हुए पाकिस्तान में दुर्लभ खनिज खोजने का न्योता दिया था। अब्दुल बासित ने एक वीडियो में कहा है, 'मुनीर ने ट्रंप को बॉक्स में भरकर दुर्लभ मिनरल्स ऑफर किए लेकिन अमेरिका ने पाकिस्तान को ग्लोबल मिनरल्स कॉन्फ्रेंस में बुलाया तक नहीं है। दूसरी ओर अमेरिका ने भारत को बुलावा भेजा है। 4 फरवरी को भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर इस कॉन्फ्रेंस के लिए वॉशिंगटन में होंगे। यह इसलिए हैरत में डालता है क्योंकि मिनिरल को लेकर पाकिस्तान का यूएस के साथ एग्रीमेंट हुआ है। वहीं भारत से अमेरिका के संबंध फिलहाल अच्छे नहीं हैं।'

पाकिस्तान के आर्मी चीफ असीम मुनीर और पीएम शहबाज शरीफ ने बीते साल सितंबर में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात की थी। इस दौरान मुनीर ने ट्रंप को बलूचिस्तान के रेयर अर्थ मिनरल्स का बॉक्स दिया था। इस डिब्बे में कथित तौर पर बास्टनेसाइट और मोनाजाइट जैसे खनिज थे। इसके बाद अमेरिका का खनिजों पर पाकिस्तान के साथ एक समझौता हुआ। वाइट हाउस ने ट्रंप की शरीफ और मुनीर के साथ इस मीटिंग के फोटो जारी किए थे। इन तस्वीरों में लकड़ी के डिब्बे वाले फोटो ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींचा था। ट्रंप इस डिब्बे को बेहद गौर से देख रहे थे और मुनीर उनको कुछ समझाते दिखे थे। इस तस्वीर के बाद माना गया था कि पाकिस्तान ने अमेरिका को मिनरल्स का लालच देकर फंसा लिया है। पाकिस्तान को अमेरिका की ओर से ग्लोबल मिनरल कॉन्फ्रेंस का न्योता ना मिलना दिखाता है कि रंग-बिरंगे पत्थरों को रेयर अर्थ एलिमेंट्स (REE) बताकर डोनाल्ड ट्रंप को लुभाने का दांव शायद फेल हो गया है। पाकिस्तानी राजनयिक बासिता का दावा अगर सही है तो यह मुनीर और शहबाज दोनों के लिए एक बड़ी शर्मिंदगी का सबब है।

ईरान पर अमेरिकी हमले को लेकर इजरायल ने साध रखी है चुप्पी, क्या है नेतन्याहू का सीक्रेट प्लान

एजेंसी तेल अवीव

अमेरिका और ईरान के बीच तनाव लगातार बढ़ता जा रहा है और सारी दुनिया की नजर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के अगले कदम पर है। ट्रंप ने लगातार ईरान को लेकर धमकाने वाला रुख जारी रखा है और तेहरान को जल्द से परमाणु डील के लिए तैयार होने को कहा है। इन सबसे बीच ईरान के कट्टर दुश्मन इजरायल ने आश्चर्यजनक चुप्पी साध रखी है। इजरायल के नेतृत्व ने वॉशिंगटन के तेहरान पर हमले की संभावना पर बहुत कम टिप्पणी की है। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और उनकी कैबिनेट ने इजरायल के सबसे बड़े दुश्मन के खिलाफ अमेरिका की सैन्य कार्रवाई के बारे में सार्वजनिक चर्चा से लगभग दूरी बना रखी है। इजरायली डिफेंस इंटेलिजेंस के पूर्व अधिकारी डैनी सिट्रिनोविस इस समय इजरायल के नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज इंस्टीट्यूट में ईरान के सीनियर रिसर्चर हैं। उन्होंने बीबीसी को बताया कि यह चुप्पी बताती है कि नेतन्याहू के लिए कितना जरूरी समय है। उन्होंने कहा कि नेतन्याहू इसे एक सुनहरा मौका मानते हैं, जिसे वे गंवाना नहीं चाहते। खासतौर पर खाड़ी में अमेरिका का विशाल जंगी बेड़ा तैनात है। इजरायली शीर्ष नेतृत्व में इस बात पर सहमति है कि इस बार वॉशिंगटन को पहल करनी चाहिए। उन्होंने कहा, अमेरिकी ज्यादा मजबूत हैं, उनके पास ज्यादा क्षमताएं हैं और उन्हें कहीं ज्यादा अंतरराष्ट्रीय मान्यता भी हासिल है। हालांकि, इजरायल चुप जरूर है लेकिन शांत नहीं है और न ही हाथ पर हाथ धरे बैठा है। इस सप्ताह की शुरुआत में इजरायल के मिलिट्री इंटेलिजेस चीफ श्लोमी बाइंडर ने वॉशिंगटन में अमेरिकी खुफिया एजेंसियों के साथ बैठक कीं। इजरायली मीडिया रिपोर्टों में बताया कि इस दौरान ईरान के अंदर संभावित लक्ष्यों पर चर्चा की गई। सिट्रिनोविज का मानना है कि नेतन्याहू चाहते हैं कि अमेरिका बड़े हमले करे जो ईरानी नेतृत्व को खत्म या बहुत कमजोर कर दें। उन्होंने जनवरी की शुरुआत में ट्रंप को ईरान पर कदम पीछे खींचने को कहा था क्योंकि अमेरिका की संभावित कार्रवाई बहुत सीमित मानी जा रही थी। मध्य पूर्व में अमेरिकी सहयोगी जहां सत्ता परिवर्तन को लेकर चेतावनी दे रहे हैं कि इससे क्षेत्र अस्थिर हो सकता है।

डोनाल्ड ट्रंप की विदेश नीति में खुली गुंडागर्दी, अमेरिकी विशेषज्ञ ने दुनिया को चेताया, भारत और BRICS को दिए 3 सुझाव

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिकी अर्थशास्त्री जेफरी सैक्स ने अपने देश के हुक्मरानों की दुनिया के लिए खराब रवैये की तीखी आलोचना की है। जेफरी ने कहा है कि अमेरिकी विदेश नीति कूटनीति के बजाय गैंगेस्टर के गैंग की तरह चलाई जा रही है। अमेरिका दुनियाभर के देशों में सत्ता बदलने के ऑपरेशन, एकतरफा प्रतिबंध और हथियारों के रूप में इस्तेमाल किए जाने वाले फाइनेंस के तौर पर खुली धमकियां दे रहा है। दुनिया और भारत जैसी ताकतों को अमेरिका के इन तौर-तरीकों का विरोध करना चाहिए।

द संडे गार्जियन को दिए इंटरव्यू में जेफरी सैक्स ने कई बातें कही हैं। उनका मानना है कि संयुक्त राष्ट्र कमजोर हुआ है क्योंकि दूसरी बड़ी ताकतें अमेरिका की मनमानी का सामना करने में नाकाम हैं। इससे 1945 के बाद की व्यवस्था खतरे में आ गई है। जैफरी ने गैर-पश्चिमी दुनिया खासतौर से भारत और BRICS देशों से अपील की है कि वे संयुक्त राष्ट्र चार्टर की रक्षा का काम करें और अमेरिका की टकराव की रणनीतियों में ना फंसें।

जेफरी ने कहा, 'अमेरिका ने यूएन को बहुत नुकसान पहुंचाया है। हालांकि अभी यह संस्था पूरी तरह खत्म नहीं हुई है लेकिन बहुत देर होने से पहले इसे बचाने की जरूरत है। BRICS को इसके बचाव में एक अहम भूमिका निभानी चाहिए। इस साल BRICS की अध्यक्षता भारत के पास है। मैं ब्रिक्स के देशों को तीन सुझाव देना चाहता हूं।

पहला- BRICS को एक समूह के तौर पर अमेरिका की एकतरफा नीतियों की निंदा करे और बोर्ड ऑफ पीस जैसी नीतियों को खारिज कर दे। दूसरा- BRICS को समूह के तौर पर UN सुरक्षा परिषद में स्थायी सीटों के लिए भारत और ब्राजील का समर्थन करना चाहिए, ताकि अमेरिकी दबदबे को संतुलित किया जा सके। तीसरा- भारत को क्वाड छोड़ देना चाहिए, ताकि अमेरिका अपनी चीन विरोधी नीतियों में भारत का इस्तेमाल ना कर सके।

डोनाल्ड ट्रंप के वेनेजुएला में हमले और ग्रीनलैंड-ईरान को हमले को धमकियों के सवाल पर जेफरी ने कहा, 'ट्रंप वह कह रहे हैं जो पहले सिर्फ निजी तौर पर या छुपकर बोला जाता था। अमेरिकी विदेश नीति अब एक खुली गुंडागर्दी है। बाकी दुनिया UN के सिद्धांतों पर चलकर और एकजुट होकर अमेरिकी मिलिट्रीवाद के खिलाफ आवाज उठा सकती है। दुनिया को तुरंत इस पर सोचना और अमल करना होगा।'

U-19 वर्ल्ड कप में भारत-पाक कप्तानों ने नहीं मिलाया हाथ, सेमीफाइनल की जंग के बीच मैदान पर दिखी भारी तल्खी

एजेंसी नई दिल्ली

अंडर-19 वर्ल्ड कप 2026 में आज क्रिकेट जगत का सबसे बड़ा मुकाबला भारत और पाकिस्तान के बीच शुरू हुआ। लेकिन मैच की पहली गेंद डलने से पहले ही मैदान पर खिलाड़ियों के बीच का तनाव साफ नजर आया। टॉस के दौरान भारतीय कप्तान आयुष म्हात्रे और पाकिस्तानी कप्तान फरहान यूसुफ ने एक-दूसरे से हाथ नहीं मिलाया, जिसने एक बार फिर से ये दिखा दिया है कि दोनों देशों के बीच चल रहे तनाव का असर खेल पर भी देखने को मिल रहा है।क्रिकेट मैदान पर दोनों देशों के खिलाड़ियों के बीच हाथ ना मिलाने का यह सिलसिला 2025 के एशिया कप से चला आ रहा है, जब भारतीय सीनियर टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव ने पाकिस्तानी कप्तान से हाथ मिलाने से इनकार कर दिया था। इसके बाद इंडिया-ए और पाकिस्तान शाहीन के बीच भी ऐसा ही नजारा देखा गया था। यहां तक कि महिला वर्ल्ड कप के दौरान भी दोनों देशों के खिलाड़ियों ने एक दूसरे से हाथ नहीं मिलया था। राजनीतिक तनाव का साया अब जूनियर क्रिकेट पर भी पड़ता दिख रहा है, जहां टॉस तो हुआ, लेकिन दोनों देशों के कप्तानों ने एक दूसरे को देखा तक नहीं।

सुपर-6 ग्रुप-2 के इस निर्णायक मुकाबले में पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। यह मैच असल में सेमीफाइनल का नॉकआउट मुकाबला है। ग्रुप-1 से ऑस्ट्रेलिया और अफगानिस्तान पहले ही सेमीफाइनल में पहुंच चुके हैं, जबकि ग्रुप-2 से इंग्लैंड ने अपनी जगह पक्की कर ली है। अब आखिरी बचे एक स्थान के लिए भारत और पाकिस्तान के बीच सीधी भिड़ंत है।

भारतीय टीम इस टूर्नामेंट में अब तक अजेय रही है और तीन मैचों में तीन जीत के साथ +3.337 के मजबूत नेट रन-रेट के साथ दूसरे स्थान पर है। वहीं, पाकिस्तान दो जीत और एक हार के साथ तीसरे स्थान पर है। पाकिस्तान को सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए न केवल भारत को हराना होगा, बल्कि रनों का अंतर इतना बड़ा रखना होगा कि वे भारत के विशाल नेट रन-रेट को पीछे छोड़ सकें। दूसरी ओर, आयुष म्हात्रे की कप्तानी वाली टीम इंडिया के लिए केवल एक जीत सेमीफाइनल का टिकट पक्का कर देगी।

दोनों टीमों की प्लेइंग इलेवन

भारत अंडर-19ः एरन जॉर्ज, वैभव सूर्यवंशी, आयुष म्हात्रे (कप्तान), विहान मल्होत्रा, अभिज्ञान कुंडू (विकेटकीपर), वेदांत त्रिवेदी, आरएस अंबरीश, कनिष्क चौहान, खिलन पटेल, हेनिल पटेल, दीपेश देवेंद्रन।

पाकिस्तान अंडर-19ः हमजा जहूर (विकेटकीपर), समीर मिन्हास, उस्मान खान, अहमद हुसैन, फरहान यूसुफ (कप्तान), हुजैफा अहसान, अली हसन बलूच, अब्दुल सुभान, मोमिन कमर, मोहम्मद सैयाम, अली रजा।

कप्तान देवदत्त पडिक्कल ने ठोका शतक, कर्नाटक पंजाब को हराकर रणजी ट्रॉफी के क्वार्टर फाइनल में पहुंची

एजेंसी नई दिल्ली

29 जनवरी से कर्नाटक और पंजाब के बीच रणजी ट्रॉफी का मुकाबला मोहाली के आईएस बिंद्रा पंजाब क्रिकेट ऐसोसिएशन स्टेडियम में खेला जा रहा था, जोकि अब समाप्त हो गया है। कर्नाटक ने 5 विकेट से मुकाबला अपने नाम कर लिया, जिसके चलते वह रणजी ट्रॉफी के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए हैं। अब क्वार्टर फाइनल में उनका सामना मुंबई से होने वाला है। कर्नाटक की पंजाब के खिलाफ इस जीत में कप्तान देवदत्त पडिक्कल ने अहम भूमिका निभाई।

पंजाब ने कर्नाटक के लिए 250 रन का टारगेट सेट किया। खेल के चौथे दिन कर्नाटक ने 27.5 ओवर में ही यह टारगेट चेज कर लिया और क्वार्टर फाइनल में अपनी जगह बना ली। देवदत्त पडिक्कल ने कप्तानी पारी खेली। उन्होंने दूसरी पारी में 85 गेंद का सामना कर 141.18 के स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी करते हुए नाबाद 120 रन बनाए। पडिक्कल ने अपनी पारी में 6 चौके और 5 छक्के लगाए। वह इस रन चेज में अपनी टीम के हीरो रहे।

पंजाब ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया था। ऐसे में पंजाब ने पहली पारी में 309 रन बनाए। अभिजीत गर्ग और इमनजोत सिंह ने 83-83 रन बनाए थे। कर्नाटक के लिए 4 विकेट विद्याधर पाटिल ने 4 तो श्रेयस गोपाल ने 3 विकेट लिए।

इसके बाद कर्नाटक ने पहली इनिंग्स में 316 रन बना दिए और 7 रन की बढ़त हासिल की। श्रेयस गोपाल ने कर्नाटक के लिए सर्वाधिक 77 रन बनाए। केएल राहुल ने भी 59 रन बनाए। हरप्रीत बरार ने 4 तो सुखदीप बाजवा ने 3 विकेट झटके। पंजाब दूसरी पारी में 256 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। ऐसे में कर्नाटक को 250 रन का टारगेट मिला। 250 रन के टारगेट का पीछा करते हुए कर्नाटक के लिए देवदत्त पडिक्कल के शतक के अलावा मयंक अग्रवाल ने भी 53 रन बनाए थे। पंजाब के लिए 2-2 विकेट अनमोलजीत सिंह और इमनजोत सिंह ने लिए। 1 विकेट सुखदीप बाजवा को भी मिला।

कार्लोस अल्काराज ने जोकोविच को हराकर जीता ऑस्ट्रेलियन ओपन, बनाया करियर ग्रैंड स्लैम का वर्ल्ड रिकॉर्ड

एजेंसी मेलबर्न

स्पेन के युवा टेनिस स्टार कार्लोस अल्काराज ने 1 फरवरी 2026 को मेलबर्न पार्क में इतिहास रच दिया है। ऑस्ट्रेलियन ओपन के रोमांचक फाइनल में अल्काराज ने दिग्गज नोवाक जोकोविच को चार सेटों के कड़े मुकाबले में 2-6, 6-2, 6-3, 7-5 से हराकर अपना पहला ऑस्ट्रेलियन ओपन खिताब जीता। इस जीत के साथ ही 22 वर्षीय अल्काराज करियर ग्रैंड स्लैम पूरा करने वाले दुनिया के सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बन गए हैं। अल्काराज अब दुनिया के केवल नौवें ऐसे पुरुष खिलाड़ी हैं जिनके नाम चारों ग्रैंड स्लैम खिताब (विंबलडन, फ्रेंच ओपन, यूएस ओपन और अब ऑस्ट्रेलियन ओपन) दर्ज हैं। उनके पास अब कुल सात प्रमुख खिताब हैं, जिनमें दो-दो विंबलडन, फ्रेंच ओपन और यूएस ओपन की ट्रॉफियां शामिल हैं। इस जीत ने टेनिस जगत में एक नए युग की आधिकारिक शुरुआत कर दी है, जहां अल्काराज नंबर 1 और जैनिक सिनर नंबर 2 के तौर पर अपना दबदबा बनाए हुए हैं।

मैच की शुरुआत में 38 वर्षीय जोकोविच ने अपने अनुभव का परिचय देते हुए पहला सेट 6-2 से आसानी से जीत लिया। उनकी सर्विस इतनी सटीक थी कि अल्काराज को रिटर्न पर केवल दो अंक मिले। हालांकि, दूसरे सेट से अल्काराज ने अपनी चाल बदली। अपने जादुई ड्रॉप शॉट्स और तेज मूवमेंट के दम पर उन्होंने जोकोविच को बेसलाइन पर थका दिया और अगला सेट 6-2 से जीतकर मैच में बराबरी कर ली।

तीसरे सेट में अल्काराज ने कड़े संघर्ष के बाद 6-3 से जीत दर्ज की। चौथे सेट में जोकोविच ने वापसी की पूरी कोशिश की और नौवें गेम में अल्काराज की सर्विस तोड़ने के करीब पहुंचे, लेकिन युवा स्पेनिश खिलाड़ी ने दबाव में अपना आपा नहीं खोया। मैच का सबसे बड़ा मोड़ 12वें गेम में आया, जब जोकोविच की एक गलती ने अल्काराज को दो चैंपियनशिप पॉइंट दिला दिए। पहले ही मौके पर जोकोविच ने गेंद बाहर मारी और अल्काराज ने अपनी पहली ऑस्ट्रेलियन ओपन ट्रॉफी चूमी।

बाबर आजम ने फिफ्टी जड़ने के लिए खेली 36 बॉल, अब सोशल मीडिया पर फैंस लगा रहे क्लास

एजेंसी नई दिल्ली

लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया के बीच तीन मैच की टी20 सीरीज का तीसरा और अंतिम मुकाबला आज यानी 1 फरवरी को खेला गया। इस मुकाबले में बाबर आजम के बल्ले से अर्धशतक देखने को मिला। हालांकि, उनका स्ट्राइक रेट अब भी चिंता का विषय बना हुआ है। बाबर आजम ने काफी सुस्त फिफ्टी लगाई है।

पाकिस्तान के पूर्व कप्तान और अनुभवी बल्लेबाज बाबर आजम चौथे नंबर पर बैटिंग करने के लिए उतरे। वह अंत तक नाबाद रहे। उन्होंने फिफ्टी भी जड़ी। लेकिन, उनका स्ट्राइक रेट काफी निराशाजनक रहा। बाबर ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 36 गेंद में नाबाद 50 रन बनाए। उनका स्ट्राइक रेट 138.89 का रहा। बाबर ने अपनी पारी में सिर्फ 3 चौके और 1 छक्का लगाया।

पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग का फैसला किया था। पाकिस्तान ने 20 ओवर में 6 विकेट पर 207 रन बनाए। साइम अयूब ने 56 तो शदाब खान ने 19 गेंद में 46 रन की तेज तरार पारी खेली। हालांकि, बाबर को उनकी इस पारी के लिए सोशल मीडिया पर ट्रोल किया जा रहा है।

बाबर का स्ट्राइक रेट वर्ल्ड कप में पाकिस्तान को कर सकता है बैकफायर आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप 2024 के बाद बाबर आजम को पाकिस्तान की टी20 टीम से ड्रॉप कर दिया गया था। वह लंबे समय तक टी20 नहीं खेल रहे थे। लेकिन, टी20 वर्ल्ड कप से ठीक पहले उनको टीम में शामिल कर लिया गया है। बाबर वर्ल्ड कप स्क्वाड का भी हिस्सा हैं। हालांकि, उनका फॉर्म चिंता का विषय बनी हुई है।

बाबर उस स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी नहीं कर रहे हैं, जिस स्ट्राइक रेट से आज कल टी20 में बल्लेबाजी हो रही है। बाबर का स्ट्राइक रेट टी20 वर्ल्ड कप में बैकफायर भी कर सकता है। बाबर ने बिग बैश लीग में भी हिस्सा लिया था। लेकिन उनका बल्ला बिग बैश में भी खामोश रहा था।

व्यापार

बजट पेश हो गया; क्या और नीचे जाएगा सोने-चांदी का भाव, खरीदारी का सही समय कब

एजेंसी नई दिल्ली

1 फरवरी को मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (MCX) पर सोने और चांदी के वायदा भाव में भारी गिरावट आई। यह शुक्रवार को हुई बिकवाली का ही असर था। निवेशकों की ओर से मुनाफावसूली और अमेरिकी डॉलर के मजबूत होने से बाजार की धारणा प्रभावित हुई। यूनियन बजट 2026 पेश होने के कारण MCX रविवार को विशेष ट्रेडिंग सत्र के लिए खुला। सुबह करीब 10 बजे एमसीएक्स सोना 1,40,000 रुपये प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रहा था, जो 6.72% की गिरावट थी। वहीं, MCX चांदी 2,65,701 रुपये प्रति किलोग्राम पर थी, जो 8.98% नीचे थी। अंतरराष्ट्रीय बाजार बंद होने के कारण वैश्विक संकेत उपलब्ध नहीं थे। लिहाजा, घरेलू फैक्टर, खासकर बजट घोषणाओं से कीमतों में उतार-चढ़ाव की उम्मीद थी। इस हफ्ते की शुरुआत में रिकॉर्ड ऊंचाई छूने के बाद कीमती धातुओं के दाम थोड़े कम हुए हैं। लेकिन, ये दाम अभी भी इतने ऊंचे हैं कि लोग हर छोटे-बड़े उतार-चढ़ाव पर नजर रख रहे हैं। कीमतों में आई इस गिरावट ने लोगों की हड़बड़ी तो कम कर दी है। लेकिन, निवेशकों की दिलचस्पी अभी भी बनी हुई है। वे कीमतों में आई इस कमी को खरीदारी का अच्छा मौका मान रहे हैं। इस तेज गिरावट का एक मुख्य कारण अमेरिकी फेडरल रिजर्व से जुड़ी खबरें थीं, जिन्होंने डॉलर को मजबूत किया। यह करेक्शन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से केविन वॉर्श को अगले फेडरल रिजर्व चेयर के रूप में चुनने की घोषणा के बाद आया।

इस घोषणा ने अमेरिकी केंद्रीय बैंक की स्वतंत्रता में विश्वास बढ़ाया। अमेरिकी डॉलर को 97 के स्तर से ऊपर धकेल दिया। जब डॉलर मजबूत होता है तो सोने की कीमतें आमतौर पर गिरती हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सोने का दाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डॉलर में तय होता है। जब डॉलर महंगा होता है तो विदेशी खरीदारों के लिए सोना खरीदना महंगा हो जाता है। इससे उसकी मांग कम हो जाती है।

भारत अपनी जरूरत का लगभग सारा सोना और 80 फीसदी से ज्यादा चांदी आयात करता है। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय कीमतों में होने वाला हर उतार-चढ़ाव भारत में सोने-चांदी की कीमतों को सीधे तौर पर प्रभावित करता है। पिछले साल विदेशी मुद्रा का एक बड़ा हिस्सा सोना और चांदी खरीदने में खर्च हुआ। आयात बढ़ने से व्यापार घाटा बढ़ा है। इस महीने रुपया रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंच गया है। ये ऐसे फैक्टर हैं जो बजट के बाद कीमतों के व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं।महंगी कीमतों के चलते गहनों की खरीदारी थोड़ी कम हो गई है। लेकिन, निवेश के तौर पर सोने-चांदी की मांग तेजी से बढ़ रही है। 2025 में गोल्ड ईटीएफ की संपत्ति लगभग तीन गुना हो गई है। शेयर बाजार में कमजोर रिटर्न के बीच निवेशकों ने सुरक्षा के लिए इसमें करीब 400 अरब रुपये से ज्यादा का निवेश किया है। सिल्वर ईटीएफ में तो इससे भी ज्यादा तेजी आई है। कारण है कि खरीदार सोने से आगे बढ़कर ज्यादा तेजी वाले निवेश की तलाश में हैं। तकनीकी तौर पर सोने-चांदी के साथ क्या हुआ? एनरिच मनी के सीईओ पोनमुडी आर ने सोने पर तकनीकी दृष्टिकोण बताते हुए कहा कि MCX गोल्ड फ्यूचर्स को 1,80,000–1,81,000 के आसपास मजबूत रेजिस्टेंस का सामना करना पड़ा। इसके बाद भारी बिकवाली हुई। कीमतें 1,36,000 की ओर फिसल गईं। यह हेल्दी करेक्शन के बजाय भारी मुनाफावसूली का संकेत देता है। उन्होंने आगे कहा कि सोने को 1,32,000–1,35,000 की रेंज से ऊपर बने रहने की जरूरत है ताकि और गिरावट से बचा जा सके। जब तक कीमतें 1,45,000 से ऊपर वापस नहीं आतीं तब तक निकट भविष्य के लिए सतर्क रहने की सलाह है।

चांदी के बारे में पोनमुडी ने बताया कि 4,20,000 के आसपास रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचने के बाद फ्यूचर्स ने 'ब्लो-ऑफ टॉप' जैसा व्यवहार दिखाया। इसके बाद कीमतें तेजी से गिरकर 2,84,000 पर आ गईं, जो कि लीवरेज्ड पोजीशन की घबराहट भरी बिकवाली का संकेत है। 2,60,000–2,55,000 का क्षेत्र अब एक महत्वपूर्ण सपोर्ट एरिया है। 3,00,000–3,10,000 की ओर कोई भी उछाल बिकवाली के दबाव का सामना कर सकता है, जिससे अल्पावधि में अस्थिरता बनी रहेगी। इस पर जानकारों ने कहा कि तेज गिरावट के बावजूद सोने और चांदी के लिए लंबी अवधि का आउटलुक पॉजिटिव बना हुआ है, खासकर जब बाजार 2026 की ओर बढ़ रहा है। केंद्रीय बैंकों की मजबूत खरीदारी, जारी भू-राजनीतिक जोखिम और फिएट करेंसी से हटकर विविधीकरण के प्रयास सोने को लगातार समर्थन दे रहे हैं। वहीं, चांदी को सप्लाई की कमी और ग्रीन एनर्जी, इलेक्ट्रिक वाहनों, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इलेक्ट्रॉनिक्स और सोलर पावर जैसे क्षेत्रों से बढ़ती औद्योगिक मांग का सहारा मिल रहा है। फिलहाल, विशेषज्ञ छोटी अवधि में सावधानी बरतने की सलाह दे रहे हैं। निवेशकों को नई पोजीशन लेने से पहले कीमतों में स्थिरता और मुख्य सपोर्ट लेवल पर बारीकी से नजर रखनी चाहिए।

बांग्लादेश पर गिरी गाज, भारत ने मदद की रकम कर दी आधी, कसिकी भरी झोली

एजेंसी नई दिल्ली

केंद्रीय बजट 2026 में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने पड़ोसी देशों को दी जाने वाली सहायता राशि में बड़े बदलाव किए हैं। बांग्लादेश को मिलने वाली सहायता आधी कर दी गई है। वहीं, ईरान के चाबहार बंदरगाह परियोजना के लिए कोई भी पैसा आवंटित नहीं हुआ है। यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब भारत और बांग्लादेश के द्विपक्षीय संबंधों में कुछ खटास आई है। वहीं, कुल 'देशों को सहायता' का खर्च पिछले साल के मुकाबले बढ़ाया गया है। लेकिन, यह पिछले साल के संशोधित अनुमानों से कम है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने केंद्रीय बजट 2026 में बांग्लादेश को दी जाने वाली सहायता राशि में भारी कटौती की है। पिछले साल के बजट अनुमानों में जहां बांग्लादेश को 120 करोड़ रुपये मिले थे। वहीं, 2026-27 के लिए यह रकम घटाकर 60 करोड़ रुपये कर दी गई है। यह कटौती ऐसे समय में हुई है जब अगस्त 2024 में शेख हसीना के देश छोड़कर जाने के बाद अंतरिम प्रमुख मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व में बांग्लादेश के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों में कुछ तनाव देखा गया है।

इस बजट में एक और बड़ा आश्चर्य चाबहार बंदरगाह परियोजना के लिए फंडिंग का पूरी तरह से बंद होना है। बजट दस्तावेजों में 2026-27 के लिए इस परियोजना के लिए कोई भी राशि आवंटित नहीं की गई है। भारत ने 2024-25 में चाबहार पर 400 करोड़ रुपये खर्च किए थे। 2025-26 के लिए सरकार ने 100 करोड़ रुपये का बजट रखा था। इसे बाद में संशोधित अनुमानों में बढ़ाकर 400 करोड़ रुपये कर दिया गया था। लेकिन, इस साल यह राशि शून्य हो गई है। यह फैसला तब आया है जब भारत ने 2024 में चाबहार में शाहिद बेहेश्ती टर्मिनल को संचालित करने के लिए 10 साल का समझौता किया था। इस परियोजना को पाकिस्तान से गुजरे बिना अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक पहुंच बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके अलावा, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस साल की शुरुआत में तेहरान के साथ व्यापार करने वाले देशों पर 25% टैरिफ लगाने की घोषणा की थी। बांग्लादेश की सहायता में कटौती और चाबहार परियोजना पर रोक के बावजूद भूटान भारतीय सहायता प्राप्त करने वाला सबसे बड़ा देश बना हुआ है। भूटान के लिए आवंटन में लगभग 6 फीसदी की बढ़ोतरी की गई है, जो अब 2,289 करोड़ रुपये हो गया है। नेपाल को भी लगभग 14% अधिक सहायता मिलेगी। इसका आवंटन बढ़ाकर 800 करोड़ रुपये कर दिया गया है। श्रीलंका को 400 करोड़ रुपये मिलेंगे, जो पिछले स्तर से लगभग एक-तिहाई ज्यादा है।

वहीं, मालदीव के लिए सहायता राशि में 8% की कटौती की गई है, जो अब 550 करोड़ रुपये हो गई है। मॉरीशस को भी 550 करोड़ रुपये ही आवंटित किए गए हैं। हालांकि उसे 10% की बढ़ोतरी मिली है। अफगानिस्तान के लिए सहायता राशि 150 करोड़ रुपये पर स्थिर रखी गई है। इसमें ज्यादातर राशि मानवीय सहायता पर खर्च होगी। म्यांमार के लिए आवंटन में लगभग 14% की कमी की गई है, जो अब 300 करोड़ रुपये हो गया है।

कुल मिलाकर, 'देशों को सहायता' पर कुल खर्च को बढ़ाकर 5,686 करोड़ रुपये कर दिया गया है, जो पिछले साल के बजट अनुमानों 5,483 करोड़ रुपये से लगभग 4% ज्यादा है। हालांकि, यह रकम 2025-26 के संशोधित अनुमानों 5,785 करोड़ रुपये से कम है। यह बजट दिखाता है कि भारत अपनी विदेश सहायता नीतियों में रणनीतिक बदलाव कर रहा है। इसमें कुछ देशों को प्राथमिकता दी जा रही है और कुछ परियोजनाओं से हाथ खींचा जा रहा है।

मनी माइंडेड और रहस्यमयी प्रवृत्ति के होते हैं कन्या राशि वाले लोग, जानिए इनकी खूबियां, कमियां और काम- कारोबार के बारे में

वैदिक ज्योतिष में 12 राशियों का वर्णन मिलता है। यहां हम बात करने जा रहे हैं कन्या राशि के बारे में, जिसके स्वामी व्यापार और बुद्धि के दाता बुध देव हैं। साथ ही जिन लोगों का नाम ढो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो अक्षर से शुरू होता है, तो आपकी कन्या राशि बनती है। इस राशि से जुड़े लोग मनी माइंडेड होते हैं। साथ ही ये लोग हर काम को अच्छी तरह से करते हैं और काफी हद तक परंपरावादी सोच के होते हैं। ये लोग बातें बनाने में काफी कुशल होते हैं और मजाकिया होते हैं। वहीं ये लोग दूरदर्शी भी होते हैं। आइए जानते हैं कन्या राशि वालों का नेचर और काम- कारोबार के बारे में

कन्या राशि से जुड़े लोग लोगों के अंदर सोचने की क्षमता काफी अच्छी होती है। साथ ही ये लोग विनम्र होते हैं। ये व्यवहारिक होते हैं और दोस्ती को अच्छे से निभाते हैं। साथ ही ये लोग हाजिर जबावी होते हैं। साथ ही इन लोगों की समाजिक छवि बहुत अच्छी होती है। वहीं कन्या राशि से जुड़े लोगों का प्रबंधन अच्छा होता है, जिसके कारण व्यापार आदि में इन्हें विशेष सफलता मिलती है। ऐसे लोग सहज ही समाज के नेता बन जाते हैं और सम्मान पाते हैं। इस राशि से जुड़े लोग वफादार होते हैं और ये लोग अपने रिलेशन को बहुत अच्छे होते हैं। साथ ही कन्या राशि से जुड़े लोगों को हर कार्य अपनी देखरेख में करना काफी पसंद आता है इसलिए ये अच्छे लीडर भी होते हैं। अपनी टीम में ये काफी मेहनती होते हैं और अपने लक्ष्य को पाने के लिए कड़ी मेहनत भी करते हैं। वहीं ये लोग घूमने- फिरने के शौकीन होते हैं। साथ ही ये लोग खाने- पीने के शौकीन होते हैं। वहीं ये लोग अच्छे वक्ता भी होते हैं। ये लोग किसी बात की गहराई तक जाने की कोशिश करते हैं।

कन्या राशि का काम- कारोबार

कन्या राशि से जुड़े लोग मैनेजमेंट, कंसल्टेंसी, फाइनेंस, शिक्षा, लेखन, और आईटी जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। वहीं संगीत, फिल्म लाइन में भी ये लोग अच्छा नाम कमाते हैं।

आपकी लाइफ में भी रुके हैं काम ? Good Luck के लिए घर में ऐसे रखें हाथी की मूर्ति

हर किसी के जीवन में उतार-चढ़ाव देखने को मिलते हैं। लाइफ का हर समय एक जैसा कभी नहीं होता है। अक्सर होता है कि बनते-बनते काम रुक जाते हैं। इसका कई कारण हो सकते हैं, इन्हीं में से एक वास्तु खराब भी हो सकता है। इसकी वजह से हमारे जीवन में परेशानियां आती है। इसको सुधारने के लिए कई सार लोग अलग-अलग चीजों का रखते हैं, उसके जीवन की परेशनियां दूर हो सके। अगर आप हाथी रखने की सोच रहे हैं, तो यह जान लें किस धातु का होने श्रेष्ठ होता है और कौन-सा शुभ माना जाता है। इसके साथ ही क्या लाभ मिलते हैं, आइए आपको बताते हैं।

अगर आफ घर में हाथी रखने की सोच रहे हैं, तो ऐसे में आप चांदी, पीतल या संगमरमर के हाथी को रख सकती हैं। इन तीनों धातु से बना हाथी घर के लिए काफी शुभ माना जाता है। इसके साथ ही यह वास्तु के लिए अच्छा माना जाता है। आप भी इन धातु के हाथी को घर पर सही दिशा में रख सकते हैं और वास्तु को बेहतर बना सकती हैं।

- वास्तु शास्त्र के मुताबिक, हाथी रखने के लिए कुछ खास नियम होते हैं जिनका पालन करना जरुरी है। यह आपके घर के वास्तु को अच्छा रखता है।

सदैव हाथियों को जोड़ा में रखना चाहिए। अकेला हाथी नहीं रखना चाहिए।

- लकी माना जाता है ऊपर की ओर ढ़ वाला हाथी शुभ होता है। नीचे की ओर सूंढ़ वाला हाथी संतान सुख के लिए अच्छा माना जाता है।
- आप सुरक्षा और सकारात्मकता चाहते हैं, तो मुख्य द्वार पर हाथियों को जोड़ा रखें, जिसकी सूंढ़ अंदर की तरफ हो।
- हाथी का चेहरा सदैव घर के अंदर की तरफ होना चाहिए, बाहर की तरफ नहीं।

इन बातों का रखें ध्यान

- यदि आप हाथी को घर में रखती हैं, तो इसे सही दिन और मुहूर्त के बारे में जान लें।
- जब भी आप हाथी को घर में रखने से पहले उस स्थान को साफ करा लें।
- हाथी को रोजाना साफ करें, ताकि घर का

पुखराज नहीं पहन सकते तो हाथ में बांधें इस पेड़ की जड़, गुरु बृहस्पति की कृपा से चमकेगा करियर और कारोबार

रत्न शास्त्र में 9 ग्रहों का वर्णन मिलता है। वहीं इन रत्नों पर अलग- अलग ग्रहों का आधिपत्य होता है। लेकिन आपको बता दें कि रत्न काफी महंगे होते हैं। इसलिए रत्नों को हर व्यक्ति नहीं खरीद सकता है। यहां हम बात करने जा रहे हैं केले के पेड़ की जड़ के बारे में, जिसका संबंध पुखराज रत्न से माना जाता है। वहीं केले के पेड़ की जड़ बाजार में आसानी से मिल जाती है। साथ ही केले के पेड़ की जड़ को धारण करने से पुखराज धारण करने के बराबर ही फल मिलता है। आइए जानते हैं केले के पेड़ की जड़ का महत्व और धारण करने की विधि

केले के पेड़ की जड़ हाथ में बांधने से ज्ञान में वृद्धि होती है। साथ ही डिसीजन मेकिंग अच्छी होती है। व्यक्ति की सोच सकारात्मक होती है। वहीं विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं के लिए यह अत्यंत फायदेमंद है, क्योंकि यह एकाग्रता और स्मरण शक्ति बढ़ाता है। साथ ही संतान प्राप्ति में बाधा आ रही हो तो भी इसको धारण किया जा सकता है। साथ ही अगर बृहस्पति के कारण विवाह में अड़चन आ रही है, तो केले की जड़ को हाथ में पहन सकते हैं।

मेष, धनु व मीन राशि वाले लोग केले के पेड़ की जड़ पहन सकते हैं। वहीं अगर कुंडली में गुरु ग्रह नवम, लग्न और पंचम भाव में शुभ होकर स्थित हो तो आप केले की जड़ को हाथ में धारण कर सकते हैं। वहीं अगर आप, शिक्षक, धार्माचार्य या ज्योतिषाचार्य हैं और कथा वाचक हैं तो भी आप केले के पेड़ की जड़ को हाथ में बांध सकते हैं।

केले के पेड़ की जड़ बाजार में आसानी से मिल जाती है। साथ ही इस जड़ को आपको विशाखा नक्षत्र में खरीदकर लानी चाहिए। साथ ही इसे गुरुवार के दिन पहनना चाहिए। इसे पीले कपड़े में लपेटकर बांधना शुभ रहता है। वहीं इसे बांधने से पहले गंगाजल से शुद्ध कर लें। साथ ही धारण करने से पहले गुरु बृहस्पति के बीज मंत्र का 108 बार जाप जरूर करें। साथ ही गुरु ग्रह संबंधित वस्तुओं का दान निकालकर मंदिर में दान करें।

आर्थिक राशिफलः मंगल बना रहे रूचक राजयोग, इन राशियों को मिलेगा उच्च पद और धन में होगी वृद्धि

मेष राशि का स्वामी मंगल अब मकर राशि पर आ चुका है। चंद्रमा के चतुर्थ भाव में होने से घर में उपयोग होने वाली वस्तुओं में वृद्धि होगी। नौकरी में अधीनस्थ कर्मचारी या किसी रिश्तेदार के कारण तनाव पैदा हो सकता है। इस समय आपको रुपए-पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतनी होगी। ससुराल पक्ष से भी आपको लाभ मिलता हुआ दिखाई दे रहा है। हालांकि, वाहन के प्रयोग में आपको सावधानी रखनी होगी।

वृष राशि आपकी राशि का स्वामी शुक्र नवम भाव में हैं। इस दौरान राहु कुंभ राशि का होकर दशम राज्य भाव में गोचर कर रहा है। ऐसे में जीविका के क्षेत्र में चल रहे आपके प्रयास फलीभूत होंगे। इस दौरान आपको राजनीतिक सहयोग भी मिलेगा। हालांकि, स्वास्थ्य के प्रति आपको थोड़ा सतर्क रहना होगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। किसी भी विवाद से दूरी बनाकर रखना आपके हित में होगा। वहीं, विरोधी भी आपके परास्त होंगे।

मिथुन राशि आपकी राशि से द्वितीय भाव में चंद्रमा विराजमान हैं। ऐसे में आपका मन शांत बना रहेगा। अष्टम भाव में बुध से व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इस दौरान किसी प्रकार का उपहार व सम्मान भी मिल सकता है। किसी कार्य के संपन्न होने से आपके स्वभाव एवं वर्चस्व में वृद्धि होगी। हालांकि, ससुराल पक्ष से किसी बात को लेकर मनमुटाव हो सकता है। वहीं, मित्रों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

कर्क राशि आपकी राशि का स्वामी चन्द्र द्वितीय भाव में आपके कोष में वृद्धि का संकेत दे रहा है। ऐसे में आपका दांपत्य जीवन सुखमय बना रहेगा। इस दौरान धन, पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि की प्रबल संभावना है। हालांकि, किसी शारीरिक व मानसिक समस्या से आपकी परेशानी बढ़ सकती है। छात्रों को सफलता मिलेगी और परीक्षा की दिशा में किया गया प्रयास सार्थक होगा। आपके विरोधी परास्त होंगे।

सिंह राशि आपकी कुंचली में प्रथम भाव का चन्द्रमा और सप्तम घर में कुंभ राशि का राहु आपके प्रभाव और प्रताप को बढ़ाने वाले हैं। ऐसे में रोजी और रोजगार की दिशा में आपको सफलता मिलेगी। उपहार व सम्मान भी प्राप्त हो सकता है। इस दौरान आप दूसरों से सहयोग लेने में सफल होंगे। कोई रुका हुआ कार्य इस सहयोग से पूरा करने में सफल रहेंगे। यात्रा की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। लंबे समय बाद किसी प्रियजन से भेंट संभव है।

कन्या राशि का द्वादश भाव में चन्द्रमा के होने से शुभ व्यय में बढ़ोतरी होगी। इससे आपका मान-सम्मान और कीर्ति में वृद्धि होगी। व्यवसाय से जुड़े लोगों को अपने कार्यों में सफलता मिलेगी। हालांकि, आपको अपने खान-पान में संयम रखना होगा। इसके साथ ही अनावश्यक खर्चों को भी कंट्रोल करना होगा। विरोधियों पर आपको जीत मिलेगी। रोजगार के मामले में भी दिन आपके लिए शुभ रहने वाला है।

तुला राशि स्वामी शुक्र-मकर राशि का होकर चतुर्थ भाव में हैं। इस दौरान एकादश भाव में चन्द्रमा के प्रभाव से राजनीतिक दिशा में किए गए प्रयास सफल होंगे। आपको शासन और सत्ता का पूरा सहयोग मिलेगा। इसके साथ ही कुछ लोगों के पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। किसी अभिन्न मित्र से मिलाप की संभावना है। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखेंगे तो आपके लिए लाभकारी रहेगा।

वृश्चिक राशि स्वामी मंगल के मकर राशि पर होने और तृतीय भाव में चन्द्रमा की उपस्थिति से पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। घर-परिवार के वरिष्ठ लोगों का आपको सहयोग मिलेगा। इसके अलावा शासन और सत्ता के सहयोग से कोई रुका हुआ कार्य पूरा हो जाएगा। हालांकि, आपको थोड़ा सतर्क भी रहना होगा। किसी मूल्यवान वस्तु के खोने व चोरी की संभावना दिख रही है। फिलहाल अपनी फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें।

धनु राशि का देव गुरु बृहस्पति मिथुन राशि पर और चन्द्रमा नवम प्रमुख त्रिकोण स्थान में चल रहे हैं। ऐसे में यह समय आपके लिए आर्थिक दिशा में सफलता दिलाने वाला रहेगा। वाणी की सौम्यता के कारण आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। वहीं, ससुराल पक्ष से लाभ मिलता हुआ दिख रहा है। हालांकि, स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सचेत रहना होगा। फिलहाल अपने खान-पान में संयम बरतें।

मकर राशि आपकी राशि से द्वितीय राहु और राशि का स्वामी शनि पराक्रम भाव में है। इसके कारण आपकी व्यावसायिक योजना को बल मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति आपको थोड़ा अधिक सचेत रहना होगा। कार्यक्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान आपको मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। आपको अपने विरोधियों पर जीत मिलेगी।

कुंभ राशि के जातकों के सप्तम भाव में सिंह राशि का चन्द्रमा मौजूद हैं। इसके फलस्वरूप बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलने की प्रबल संभावना है। आर्थिक दिशा में किए गए प्रयास सफल होंगे। व्यापार बढ़ने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए उत्तम रहेगा। खान-पान पर संयम रखें। ससुराल पक्ष से भी किसी तरह का लाभ मिल सकता है। हालांकि, झगड़े और विवाद से खुद को दूर रखें।

मीन राशि आपकी राशि का स्वामी बृहस्पति पंचम भाव में विराजमान है। यह सुख और मित्र का भाव है। इसके शुभ प्रभाव से आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी और प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग हैं। रोजगार के क्षेत्र में चल रहे प्रयास सफल रहेंगे। राजनीतिक सहयोग से भी आपको लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना होगा। वाणी पर संयम रखने से रिश्तों में मधुरता आएगी।

राम नाम की शक्ति और त्रिवेणी का आशीर्वाद बदल देता है भाग्य, असंभव भी हो जाता है संभव

इतिहास और लोक परंपरा गवाह है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी राम नाम ने असंभव को संभव किया है। वनवास, युद्ध, त्याग और परीक्षा, राम कथा स्वयं इस बात का प्रमाण है कि नाम की शक्ति व्यक्ति को इतना समर्थ बना देती है कि परिस्थिति स्वयं झुक जाती है। आज के तनावग्रस्त, अनिश्चित और भयग्रस्त समाज में राम नाम एक ऐसा आध्यात्मिक आश्रय है, जो व्यक्ति को भीतर से मजबूत बनाता है। राम नाम महामंत्र के उच्चारण और लेखन से चेतना का स्पंदन होता है, जो भाग्य बदलने की असीम शक्ति रखता है। जब यह दिव्य नाम गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती की त्रिवेणी शक्ति से जुड़ता है, तब व्यक्ति के कर्म, विचार और भाग्य, तीनों में परिवर्तन दिखाई देने लगता है।

राम नाम महाशक्ति मंत्र है, तुलसीदास जी ने स्पष्ट कहा, "राम नाम मनि दीप धरु, जीह देहरी द्वार", अर्थात राम नाम वह दीपक है जो जीवन के अंधकार को स्वयं प्रकाशित कर देता है। ज्योतिष शास्त्र का

भी उद्देश्य एक दीपक जैसा है जो जीवन के कठिन समय यानि अंधकार में व्यक्ति को सफलता का मार्गदर्शन दिखाता है। अगर देखा जाए तो राम नाम का लेखन ग्रहों के अशुभ प्रभावों को शांत करता है, क्योंकि राम नाम मन को स्थिर कर देता है और स्थिर मन पर कोई ग्रह भारी नहीं पड़ता।

राम नाम की शक्ति त्रिवेणी का आशीर्वाद बनकर जीवन में उतरती है, और वहीं से दुर्भाग्य की धारा मुड़कर सौभाग्य की ओर बहने लगती है। इसलिए प्रतिवर्ष माघ मेले में लाखों-करोड़ों श्रद्धालु संगम तट पर स्थित प्रयागराज के राम नाम बैंक में राम नाम का खाता खुलवाकर एक माह निरन्तर गंगा स्नान के पश्चात् राम नाम लिखते हैं। जो व्यक्ति नियमित रूप से राम नाम का जप करता है, उसके जीवन में सही समय पर सही व्यक्ति, सही अवसर और सही निर्णय अपने आप आने लगते हैं। जब कर्म सुधरते हैं, तो भाग्य को सुधरने के लिए अलग से प्रयत्न नहीं करना पड़ता।

भाजपा द्वारा आयोजित व्यापारी संवाद में बोले प्रदेश अध्यक्ष

विकसित भारत के संकल्प को साकार करने वाला बजट : हेमंत खंडेलवाल

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

भारतीय जनता पार्टी द्वारा नगर के रामकृष्ण बगिया लॉन में आयोजित बजट प्रस्तुतिकरण एवं व्यापारी सवांद के कार्यक्रम को संबोधित करतें हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने जो बजट प्रस्तुत किया है। वह सिर्फ एक वर्ष का बजट नही बल्कि अगले 10 साल में भारत का भविष्य कैसा होगा उसे ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया गया बजट है। यह बजट देश की दिशा तय करने वाला एवं विकसित भारत 2047 के संकल्प को साकार करने वाला बजट है। श्री खंडेलवाल ने कहा कि इस बजट में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, कृषि सुधार, पर्यटन सहित सभी क्षेत्रो का विशेष ध्यान रखा गया है। बजट मे की गई घोषणाओं के अनुसार देश में तीन नए आयुर्वेद संस्थान खुलेगें, मेडिकल टूरिज्म के 5 नए हब बनेगें। नए टेक्सटाईल पार्क की स्थापना होगी, 22 नए जलमार्ग प्रारंभ किए जाएगें एवं 7 हाई स्पीड रेल कारिडोर का निर्माण किया जाएगा। छोटे शहरों में स्थित तीर्थ स्थलो की विकसित किया जाएगा। लखपति दीदीयों की आय बढाने के लिए छोटे छोटे विक्रय केन्द्र खोले जाएगें। उन्होने कहा कि प्रस्तुत बजट में रोजगार सृजन एवं उत्पादकता बढाने पर जोर दिया गया है। आने वाले दशक में भारत वैश्विक निर्माण का सबसे बढा केन्द्र बनेगा। पुराने औद्योगिक सेक्टर को जीवित किया जाएगा। मछली पालन के लिए 500 अमृत जलाशय बनाए जाएगें। डेरी उत्पादो को बढावा मिलेगा। विदेश यात्रा सस्ती होगी। पर्यटन को बढावा देने के लिए बुद्व सर्किट का निर्माण होगा। भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने कहा कि यह बजट विश्वास और विकास का बजट है। बजट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास एवं सबका प्रयास का संकल्प स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। यह बजट देश को नई दिशा देने वाला बजट है। जिसमें सभी सेक्टरो एवं समाज के सभी वर्गो के विकास की चिंता की गई है। विधायक डा.योगेश पंडाग्रे ने कहा कि बजट में 5 रिजनल मेडिकल हब बनाने के साथ साथ स्वास्थ्य पेशोवरो के लिए नए संस्थानों का उन्नयन एवं स्थापना का निर्णय भी स्वागत योग्य है। कैंसर सहित कई गंभीर बीमारीयों के उपचार के लिए प्रयुक्त होने वाली कई दवाईयों का सस्ता किया गया है। जो निश्चित ही एक राहत देने वाला कदम है। इस बजट का जितना भी स्वागत किया जाए कम है। इस अवसर पर ब्रज कपूर, गजानंद मोटवानी, नवीन तातेड, प्रेमशंकर मालवीय, श्रीचंद्र हिराणी, मंजीतसिंह साहनी, रमेश मिश्रा, नपाध्यक्ष पार्वती बारस्कर सहित प्रमुख व्यापारी, प्रोफेशनल एवं प्रबुद्ध नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन केन्द्रीय बजट प्रचार अभियान के जिला संयोजक कमलेश सिंह ने किया एवं अंत में आभार जिला कोषाध्यक्ष दीपक सलूजा ने व्यक्त किया।

मुलताई में आवारा कुत्तों ने 20 लोगों को काटा:बच्चों पर हमले बढ़े, गंभीर हालत में एडमिट; सीएमओ बोले-दो दिन में होगी नसबंदी

दैनिक कारखाने का सफर। मुलताई

मुलताई में आवारा कुत्तों की बढ़ती संख्या गंभीर चिंता का विषय बन गई है। शनिवार और रविवार को केवल दो ही दिन में नगर के विभिन्न क्षेत्रों में कुत्तों के हमलों में 20 से अधिक लोग घायल हो गए। घायलों में बड़ी संख्या बच्चे हैं, जिससे नगरवासियों में भय और आक्रोश फैल गया है।

प्रत्यक्षदर्शियों और नागरिक नितिन पवार ने बताया कि कई स्थानों पर कुत्तों ने बच्चों को दौड़ाकर काटा। स्कूल जाने वाले और खेलने निकले बच्चे इन हमलों का आसान शिकार बने। एक नाबालिग बच्ची पर कुत्तों के झुंड ने हमला कर दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। प्राथमिक उपचार के बाद उसे बैतूल जिला अस्पताल रेफर किया गया। इन घटनाओं के बाद सिविल अस्पताल में घायलों की संख्या में अचानक वृद्धि हुई। डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मचारियों को अतिरिक्त व्यवस्था करनी पड़ी। सभी घायलों को एंटी-रेबीज़ इंजेक्शन लगाए गए। चिकित्सकों ने चेतावनी दी कि कुत्तों के काटने के बाद किसी भी लापरवाही को जानलेवा परिणाम हो सकते हैं।

नगरवासियों का आरोप है कि यह स्थिति नगर पालिका की लापरवाही के कारण उत्पन्न हुई है। लंबे समय से आवारा कुत्तों की नसबंदी और पकड़-धकड़ अभियान प्रभावी ढंग से नहीं चलाया गया। कई बार शिकायत करने के बावजूद कोई स्थायी समाधान नहीं निकाला गया। स्थानीय नागरिकों और सामाजिक संगठनों ने प्रशासन से तत्काल विशेष अभियान चलाकर आवारा कुत्तों को पकड़ने और उनकी नसबंदी करने की मांग की है। संवेदनशील इलाकों में निगरानी बढ़ाने पर भी जोर दिया गया। नगरवासियों का कहना है कि यदि जल्द ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो आमजन की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। नगर के सीएमओ वीरेंद्र तिवारी ने बताया कि टीम बुलाई जा रही है और दो दिन में टीम आकर कुत्तों की नसबंदी अभियान शुरू करेगी।

बैतूल में खेत में उगाया `काला सोना':काले टमाटर की कीमत 1000 रुपए किलो... इसे सुपरफूड भी माना जा रहा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

अब तक किसानों के खेतों में लाल टमाटर ही आमतौर पर देखने को मिलते थे, लेकिन मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के प्रगतिशील किसान अनिल वर्मा ने काले टमाटर की खेती की है। इसकी कीमत 1000 रुपए किलो है। नए तरह की खेती कर अनिल ने कृषि विशेषज्ञों तक का ध्यान खींच लिया।

अनिल ने बताया कि ये काला टमाटर रंग में गहरा बैंगनी या लगभग काला दिखाई देता है। पोषण और औषधीय गुणों के कारण इसे 'सुपरफूड' की श्रेणी में रखा जा रहा है।

अनिल वर्मा बताते हैं कि रिसर्च में यह भी सामने आया कि काला टमाटर वैस्कुलर डिजीज, मोटापा और कैंसर जैसी बीमारियों से बचाव में मदद कर सकता है। इसके अलावा यह फर्टिलिटी बढ़ाने में भी सहायक माना जाता है। अनिल वर्मा एमएससी (बॉटनी) हैं। उन्होंने जड़ी-बूटियों पर लंबे समय तक रिसर्च की है और मैपकास्ट के प्रोजेक्ट पर भी काम किया है। खेती के साथ-साथ वे मछली बीज की हैचरी का संचालन भी करते हैं और सब्जी उत्पादन में सक्रिय हैं। अनिल वर्मा बताते हैं कि वे पिछले कई वर्षों से पारंपरिक खेती कर रहे हैं। लाल टमाटर, सब्जियां और अन्य फसलें उनकी आजीविका का मुख्य साधन रही हैं। लेकिन पिछले कुछ सालों में खेती की लागत तेजी से बढ़ी है। खाद, बीज, कीटनाशक, मजदूरी और सिंचाई हर चीज महंगी होती जा रही है, जबकि बाजार में दाम कई बार लागत से भी कम मिलते हैं। अनिल वर्मा का कहना है कि आज के समय में अगर किसान सिर्फ परंपरागत फसलों पर निर्भर रहेगा, तो मुनाफा कमाना मुश्किल है। इसलिए जरूरी है कि हम नई वैरायटी और हाई-वैल्यू फसलों की ओर जाएं। इसी सोच के साथ उन्होंने काले टमाटर की खेती का फैसला लिया। अनिल वर्मा ने करीब 10 साल तक आदिवासी क्षेत्रों में उपयोग होने वाली जड़ी-बूटियों पर शोध किया है। इसी दौरान उनकी नजर काले टमाटर पर पड़ी। उन्होंने बताया कि करीब 2015 के आसपास इस किस्म का इन्वेंशन हुआ था। अनिल का कहना है कि बहरीन के एक रिसर्च पेपर में काले टमाटर के बारे में पढ़ा था। इसमें एंटीऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण सामान्य टमाटर से कहीं ज्यादा होते हैं।

काले टमाटर की खेती अनिल वर्मा ने फिलहाल प्रयोग के तौर पर छोटे स्तर पर शुरू की है। उन्होंने बताया कि अभी कुछ ही कतारों में इसकी फसल लगाई गई है, ताकि मिट्टी, मौसम और उत्पादन क्षमता को समझा जा सके। नतीजे उम्मीद से बेहतर रहे हैं। कुछ पौधों पर 350 से 400 ग्राम तक वजन वाले टमाटर लगे हैं, जो सामान्य लाल टमाटर की तुलना में काफी बड़े हैं। किसान का कहना है कि अगर सब कुछ इसी तरह रहा, तो अगले सीजन में वे काले टमाटर की खेती को दो एकड़ तक बढ़ाएंगे। किसान अनिल ने काले टमाटर के पौधों को कतार में लगाए थे। काले टमाटर की खेती तकनीकी रूप से सामान्य टमाटर जैसी ही होती है, लेकिन कुछ बातों का खास ध्यान रखना जरूरी है। अनिल वर्मा बताते हैं कि उन्होंने काले टमाटर की दो किस्में लगाई हैं, एक चेरी टाइप और दूसरी बड़े आकार वाली।

खेत में आग से डेढ़ लाख का नुकसान... मक्के की फसल, पशु चारा और सिंचाई पाइप जलकर खाक

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

ग्राम खतेड़ाकला में रविवार दोपहर एक खेत में आग लगने से किसान बंशीलाल देशमुख को लगभग डेढ़ लाख रुपए का नुकसान हुआ है। इस घटना में उनकी मक्के की फसल, पशु चारा और सिंचाई पाइप जलकर नष्ट हो गए। यह घटना दोपहर करीब 1:30 बजे हुई। आग लगते ही खेतों में काम कर रहे ग्रामीणों ने तत्काल फायर ब्रिगेड को सूचना दी। ड्राइवर राकेश पवार और गिरीश पिपले सहित फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और तत्परता से आग पर काबू पाया। इससे आसपास के खेतों में खड़ी अन्य फसलें सुरक्षित बच गईं। पीड़ित किसान बंशीलाल देशमुख ने बताया कि इस आगजनी से उन्हें बड़ा आर्थिक नुकसान हुआ है। ग्रामीणों ने खेतों में आग लगने की लगातार हो रही ऐसी घटनाओं पर चिंता व्यक्त की है। आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। ग्रामीणों और किसानों ने प्रशासन से घटनास्थल का निरीक्षण कर नुकसान का आकलन करने और प्रभावित किसान को उचित राहत व सहायता प्रदान करने की मांग की है।

बैतूल में पशु से दुष्कर्म का वीडियो, भड़की हिंसा:आक्रोशित हिंदूवादी संगठनों ने दुकानें जलाईं

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

बैतूल में पशु से दुष्कर्म का वीडियो सामने आने के बाद आक्रोशित हिंदूवादी संगठनों के लोगों ने दो दुकानें जला दीं। इनमें से एक आरोपी की दुकान है। पुलिस ने आरोपी को पकड़ लिया है। घटना रविवार को दामजीपुरा की है। घटना के बाद से तनाव का माहौल है। गांव में पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। सूत्रों के अनुसार, वीडियो सामने आने के बाद सुबह 10 बजे से ही बवाल शुरू हो गया था। आक्रोशित भीड़ ने सबसे पहले आरोपी की दुकान में आग लगा दी। इसके बाद पास की एक अन्य दुकान में भी तोड़फोड़ कर आगजनी कर दी।

घटना की खबर फैलते ही हिंदू संगठनों में गुस्सा भड़क उठा और आसपास के जिलों से भी लोग दामजीपुरा पहुंचने लगे। मामले की जानकारी मिलने के बाद पुलिस प्रशासन भी हरकत में आया। एसपी वीरेंद्र जैन और प्रभारी कलेक्टर अक्षत जैन भी मौके के लिए रवाना हुए हैं। हालात को काबू करने के लिए भैंसदेही, चिचोली और मोहदा थानों का पुलिस बल मौके पर भेजा गया है। पुलिस लाइन से वज्र वाहन और अतिरिक्त बल सुबह 11.45 बजे रवाना किया गया। दोपहर करीब 1.35 बजे पुलिस फोर्स गांव पहुंची। पुलिस ने मौके पर मौजूद भीड़ को हटने के लिए कहा और स्थिति को नियंत्रण में लेने की कोशिश की। फिलहाल इलाके में तनाव का माहौल है। घटना के दौरान कई दुकानों और वाहनों को नुकसान पहुंचा है। टायर पंक्चर दुकान, इलेक्ट्रॉनिक दुकान, मोबाइल दुकान और टेलरिंग शॉप में तोड़फोड़ की गई। दो दुकानों में आगजनी भी की गई। इसके अलावा कई वाहनों को भी क्षतिग्रस्त किया गया।

जानकारी के मुताबिक घटना के दौरान भीड़ अलग-अलग मोहल्लों में घूमती रही। बाजार बंद कराए गए और इसके बाद दुकानों में तोड़फोड़ की गई। जानकारी के अनुसार, सुबह हिंदू संगठनों ने एसडीओपी को कॉल कर दुष्कर्म मामले में आवेदन देने की बात कही थी। मोहदा थाना प्रभारी ने कार्रवाई का आश्वासन दिया था। बाद में वायरल वीडियो के आधार पर आरोपी की पहचान कर उसे हिरासत में लिया गया।

मौके पर यह भी बताया गया कि वायरल वीडियो पुराना है। इसी दौरान भीड़ ने पुलिस चौकी में घुसकर आरोपी के साथ मारपीट की। इसके बाद हालात बिगड़ते चले गए और बवाल की स्थिति बन गई। पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन ने बताया कि उपद्रव की सूचना मिलते ही पुलिस बल को तुरंत मौके पर भेजा गया। स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है। वहीं मोहदा थाना प्रभारी वी.के. मौर्य ने बताया कि जिस युवक पर आरोप है, उसे पुलिस ने हिरासत में ले लिया है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949